हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार, 30 नवंबर, 2025

तापमान
अधिकतम 20.5 डिग्री
न्यूनतम 7.8 डिग्री

9 अहंकार से ओंकार की यात्रा ही अध्यात्म...

10 स्कॉलर्स रोजरी स्कूल में गरिमापूर्ण ढंग से मनाया...

खबर संक्षेप

रोहतक। सेवानिवृत्त गणित अध्यापक सिलेंद्र पाल पन्नू को सम्मानित करते शिक्षक। *फोटो : हरिभूमि*

गणित अध्यापक सिलेंद्र पाल पन्नू सेवानिवृत्त

रोहतक। राजकीय उच्च विद्यालय, गढ़ी सिसाना, सोनीपत के गणित अध्यापक सिलेंद्र पाल पन्नू 31 वर्ष 6 माह की उत्कृष्ट सेवाओं के उपरांत शनिवार को सेवानिवृत्त हो गए। वे इससे पहले जाट हाई स्कूल, रोहतक में भी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। अपने विद्यार्थियों में गणित विषय के प्रति रुचि जगाने और अनुशासन व समर्पण की प्रेरणा देने के लिए वे हमेशा याद किए जाएंगे। विद्यालय प्रबंधन और सहकर्मियों ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस्माइला में स्कूटी जलाने का आरोप

सांपला। इस्माइला गांव में मुकेश कुमार नामक व्यक्ति ने तीन युवकों पर उसकी स्कूटी में आग लगाने का आरोप लगाया है। मुकेश के अनुसार, तीन दिन पहले उसके घर में विवाह समारोह था, जिसके चलते परिवार के सभी सदस्य व्यस्त थे। उसने अपनी स्कूटी घर के पास प्लाट में खड़ी की हुई थी। इसी दौरान रात में गांव के तीन युवकों ने स्कूटी को आग के हवाले कर दिया। मुकेश की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सांपला में कार से अवैध शराब बरामद

सांपला। पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर झज्जर मार्ग स्थित सांपला बाईपास पर एक सफेद कार से अवैध शराब बरामद की। पुलिस को सूचना मिली थी कि कार में प्रतिबंधित शराब लेकर जाया जा रहा है। पुलिस को देखकर चालक ने कार को वापस मोड़कर भागने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस ने पीछा कर उसे पकड़ लिया। तलाशी लेने पर कार से 60 पेंटी देशी शराब के पव्वे बरामद हुए। पुलिस ने राजस्थान निवासी चालक रमेश चंद्र को हिरासत में लिया है।

सत्संग में यूएस से आर्य रतन डॉ शास्त्री पहुंचेंगे

रोहतक। हर सप्ताह की भांति इस सप्ताह रविवार के दिन मानसरोवर कॉलोनी स्थित महाशय धर्मचंद गांधी आर्य समाज मंदिर में होने वाले साप्ताहिक सत्संग में न्यूयॉर्क अमेरिका से आर्य रतन विभूषित डॉ. अमरजीत शास्त्री मुख्य वक्ता के रूप में पधार रहे हैं।

प्रेस के नाम जारी विज्ञप्ति में आर्य समाज की मंत्री मीना भाटिया ने जानकारी देते हुए बताया कि डॉ. अमरजीत शास्त्री इस दिन समाज से जुड़े लोगों के बीच में आर्य समाज की उपलब्धियां के बारे में ही जानकारी नहीं देंगे बल्कि आर्य समाज का देश की आर्थिक व्यवस्था और हिंदू धर्म में क्या योगदान रहा है उसके बारे में भी विस्तार से चर्चा करेंगे।

डॉ. मंगल सैन को दी जाएगी श्रद्धांजलि

रोहतक। भारतीय जनसंघ से भारतीय जनता पार्टी का राजनैतिक सफर करने वाले स्व. डॉ मंगल सैन की पुण्यतिथि 2 दिसम्बर को हुडा काम्प्लैक्स डॉ. मंगल सैन की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि के रूप में मनाई जायेगी। मनोहर लाल वधवा वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता एवं डॉ मंगल सैन विचार मंच के अध्यक्ष ने बताया कि डॉ मंगल सैन 7 बार विधायक तथा हरियाणा के उपमुख्यमंत्री रहे वह भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष तथा स्व. चौं. देवीलाल के साथ मिलकर भी काम किया।

गोहाना अड्डे पर महिला से मोबाइल नंबर मांगने वाले युवक की सरेआम पिटाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

गोहाना अड्डे पर एक महिला के पीछे पड़ने और मोबाइल नंबर मांगने वाले युवक की स्थानीय लोगों ने सरेआम जमकर पिटाई कर दी। महिला बाजार में कपड़े खरीदने आई थी, तभी आरोपी युवक ने उसका पीछा करना शुरू कर दिया और लगातार मोबाइल नंबर मांगता रहा। महिला ने शुरू में युवक की बातों को नजरअंदाज किया, लेकिन जब उसने आपत्तिजनक बातें शुरू की, तो महिला ने विरोध किया और शोर मचाया। महिला की चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग मौके पर इकट्ठा हो गए और युवक को पकड़कर उसकी पिटाई करने लगे।

घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया है, जिसमें साफ देखा जा सकता है कि महिला और स्थानीय लोग आरोपी की पिटाई कर रहे हैं। इस दौरान युवक हाथ जोड़कर माफी मांगता नजर आया, लेकिन लोगों ने उसकी बातों को अनसुना कर पिटाई जारी रखी।

महिला ने किया विरोध, स्थानीय लोगों ने भी की धुनाई

ई-रिक्शा ड्राइवर ने भी पीटा

वीडियो में यह भी दिखा कि एक ई-रिक्शा चालक भी मौके पर आया और युवक की पिटाई में शामिल हुआ। इसके बाद लोगों ने युवक को पुलिस के हवाले करने की सलाह दी, लेकिन ई-रिक्शा चालक ने उसे रिक्शा में बैठाकर अपने साथ ले गया। गोहाना अड्डे के एक दुकानदार ने बताया कि युवक कई बार वहां घूमते हुए महिला को परेशान कर रहा था और लगातार उसका नंबर मांग रहा था। आरोपी युवक की उम्र लगभग 25-26 वर्ष बताई जा रही है। उन्होंने कहा कि स्थानीय लोगों ने सही कदम उठाते हुए आरोपी को पकड़कर उसकी हद दिखाई।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए खतरा

स्थानीय लोगों ने कहा कि इस प्रकार की घटनाएं महिलाओं की सुरक्षा के लिए खतरा हैं। बहनें और बेटियां खुले में सुरक्षित महसूस नहीं कर पाती हैं, और ऐसे असभ्य लोग उन्हें परेशान करते हैं। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद लोग अधिक सजग हुए और कई ने कहा कि ऐसे लोगों को कड़ी सजा मिलनी चाहिए, ताकि महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

पुलिस को नहीं मिली शिकायत

इस मामले में पुलिस ने अभी तक कोई शिकायत प्राप्त नहीं होने की बात कही है। पुलिस ने कहा कि यदि कोई शिकायत आती है तो मामले की जांच कर आरोपी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

रोहतक बॉडी बिल्डर की भिवानी में निर्मम हत्या

लड़कियों से छेड़छाड़ रोकने का साहस बना मौत का कारण

- आरोपियों की तालाश को लेकर पुलिस ने टीमें गठित कीं
- बहन की ननद की शादी में दोस्त के साथ भिवानी गया था

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

गांव हुंमायुपूर के 26 वर्षीय अंतरराष्ट्रीय बॉडी बिल्डर रोहित धनखड़ की भिवानी में एक शादी समारोह के दौरान पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। रोहित गंभीर रूप से घायल होकर रोहतक पीजीआई लाया गया था, जहां इलाज के दौरान शनिवार को उसने दम तोड़ दिया। रोहित की मौत की सूचना मिलते ही भिवानी पुलिस मौके पर पहुंची और परिजनों के बयानों के आधार पर शव का पोस्टमॉर्टम करवा कर उसे परिजनों को सौंप दिया। वहीं, पुलिस आरोपियों की तालाश को लेकर टीमे गठित कर दी है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। पुलिस ने बताया कि रोहित की हत्या का कारण शादी समारोह में कुछ युवकों द्वारा लड़कियों से छेड़छाड़ को रोकना था। मृतक रोहित धनखड़ गांव हुंमायुपूर का रहने वाला था। वह अपनी बहन की ननद की शादी में अपने दोस्त जतिन के साथ भिवानी गया था, जहां शादी समारोह के दौरान तिगड़ाना से बारात आई। बारात में शामिल कुछ युवक लड़कियों के साथ छेड़छाड़ कर रहे थे। रोहित ने इस पर रोक लगाई और आरोपियों को समझाया। इस दौरान दोनों पक्षों में कहासुनी हुई।

बारात समाप्त होने के बाद हुई मारपीट

शादी समाप्त होने के बाद रोहित और जतिन घर लौट रहे थे, लेकिन रेलवे फाटक बंद होने के कारण गाड़ी रुक गई। इस दौरान लगभग 20 आरोपी हाथों में हथियार लेकर रोहित को घेर लिया। जतिन वाहन से उतरकर भाग गया, जबकि रोहित को पकड़कर जमकर पीटा गया। घटना के बाद रोहित को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। परिजन और अस्पताल सूत्रों के अनुसार रोहित के शरीर पर हर हिस्से में चोट के निशान थे।

रोहित की खेल उपलब्धियां

रोहित पेशे से बॉडी बिल्डर और जिम ट्रेनर था। वह रोहतक के सेक्टर-4 स्थित जिमखाना क्लब में प्रशिक्षण देता था और परिवार का सहारा था। उसके पिता सत्यवान धनखड़ की 2017 में हार्ट अटैक से मौत हो चुकी थी। रोहित ने 2018 में 16वीं सीनियर और 11वीं जूनियर कैटेगरी में 107 किलोग्राम से अधिक भार वर्ग में गोल्ड मेडल जीते थे। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने उन्हें 15 अगस्त पर

परिवार की मांग एनकाउंटर हो

मृतक के जीजा रवि ने बताया कि रोहित की हत्या करने वाले अपराधियों को फांसी मिलनी चाहिए। वहीं रोहित के चाचा सतीश धनखड़ ने कहा कि पुलिस को आरोपियों के खिलाफ एनकाउंटर कार्रवाई करनी चाहिए, ताकि ऐसे अपराधियों को उदाहरण बनाया जा सके।

पुलिस की कार्रवाई और जांच तेज, आरोपियों को जल्द पकड़ेंगे

भिवानी पुलिस ने बताया कि आरोपियों की पहचान कर उन्हें जल्द गिरफ्तार करने के लिए टीमों को लगाया गया है। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि सभी दोषियों को कानूनी कार्रवाई के तहत कठोर सजा दी जाएगी।

मेयर ने अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का किया शुभारंभ

गीता के संदेश को घर-घर पहुंचाने के लिए 51 देशों व पूरे प्रदेश में मनाया जा रहा महोत्सव

रोहतक। हवन यज्ञ में आहुति डालते महामंडलेश्वर राघवेंद्र भारती नगराधीश अंकित कुमार, मंडल आयुक्त के ओएसडी शुभम, व अन्य संतगण।

रोहतक। मेयर रामअवतार वाल्मीकि ने बतौर मुख्यातिथि स्थानीय पंडित श्रीराम शर्मा रंगशाला में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के जिला स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन कर किया। उन्होंने जीओ गीता परिवार के स्टॉल में रखे गए पवित्र ग्रंथ गीता की आरती की। इस अवसर पर हवन यज्ञ किया गया, जिसमें महामंडलेश्वर राघवेंद्र भारती तथा अन्य संतगण, डॉ. राजेश जाले, रामलीला कमेटी के प्रधान सुभाष तायल, अशोक कुमार, अशोक कुमार गुप्ता, अमित नागपाल, ध्रुव, ऋषभ ने मानव कल्याण के उद्देश्य के साथ पूर्णाहुति दी गई है। मेयर रामअवतार वाल्मीकि ने नगराधीश अंकित कुमार, मंडल आयुक्त के ओएसडी शुभम, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी राजपाल चहल, सिविल सर्जन डॉ. रमेश चंद्र, जिला शिक्षा अधिकारी मनजीत मलिक, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी दिलजीत सिंह, जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी संजीव सैनी के साथ रंगशाला परिसर में विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं तथा विभागों द्वारा लगाई गई स्टॉल का निरीक्षण किया।

स्टॉल लगाने वाली संस्थाएं

राम अवतार वाल्मीकि ने दीप प्रज्वलित कर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की विधिवत शुरूआत की। गीता महोत्सव में स्टॉल लगाने वाली संस्थाओं व विभागों में जीओ गीता परिवार, इस्कॉन सोसायटी, आर्ट ऑफ लिविंग, शिक्षा विभाग, नटवर गीता, भारत विकास परिषद, कमल विश्व हिंदू परिषद, महाराजा अग्रसेन विकास ट्रस्ट, हेडगेवार स्मारक समिति, प्रजापति ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, श्री बालकपुरी जी धर्मार्थ औषद्यालय, बागवानी विभाग, राजकीय मॉडल आईटीआई, उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम, वीटा प्लांट, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, नगर निगम, पंजाब नेशनल बैंक, जिला रेडक्रॉस सोसायटी, भाली आनंदपुर स्थित रोहतक सहकारी चीनी मिल, मन्नत हैंडीक्राफ्ट एवं स्वास्थ्य विभाग, स्वामी नित्यानंद स्कूल शामिल है।

आज होंगे ये कार्यक्रम

गीता महोत्सव के दूसरे दिन पंडित श्रीराम शर्मा रंगशाला में सुबह 10 बजे हवन यज्ञ होगा। दूसरे दिन के मुख्यातिथि राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा एवं पूर्व मंत्री मनीष कुमार ग्रोवर होंगे। रविवार को गीता के अमर संदेश पर आधारित सेमिनार का आयोजन किया जाएगा। स्कूली विद्यार्थियों के अलावा अन्य सांस्कृतिक टीमों द्वारा गीता पर आधारित भव्य प्रस्तुतियां दी जाएगी। मुरादाबाद की टीम द्वारा श्रीकृष्ण लीलाओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया जाएगा।

मंदिर चोरी मामले में तीन आरोपियों को पकड़ा

रोहतक। आरोपित पुलिस की गिरफ्त में

रोहतक। कैलाश कॉलोनी स्थित मंदिर में हुई चोरी की वारदात के सिलसिले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों को कोर्ट के आदेश पर दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है और मामले की गहनता से जांच जारी है। सिविल लाइन थाना प्रभारी अंकिता ने बताया कि मंदिर के रखवाले कृष्णमुरारी की शिकायत पर अभियोग दर्ज कर जांच शुरू की गई। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि 30 सितंबर को कृष्णमुरारी सुबह मंदिर पहुंचे तो उन्होंने पाया कि मंदिर के गेट का ताला और अंदर रखी अलमारी एवं दानपात्र के ताले टूटे हुए हैं। मंदिर से करीब 8–9 हजार रुपये चोरी हुए थे। जांच के दौरान पुलिस ने आरोपीयों के ठिकानों का पता लगाया और 28 नवंबर को प्रोडक्शन वारंट के जरिए तीनों आरोपियों को गिरफ्तार किया। आरोपियों की पहचान पवन निवासी हांसी, संदीप निवासी शिव कॉलोनी हांसी व सुरज निवासी कबीर कॉलोनी हांसी के रुप में हुई। पुलिस ने बताया कि आरोपी पहले भी अन्य वारदातों में शामिल पाए गए थे और फिलहाल हांसी जेल में बंद हैं। पुलिस सभी पहलुओं की जांच कर रही है और आरोपियों के अन्य संभावित साथियों का भी पता लगाया जा रहा है।

एसजेके कॉलेज में पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता

रोहतक। सत जीन्दा कल्याणा कॉलेज कलानौर में राजनीति विज्ञान विभाग तथा एससी-एसटी एंड माइनोरिटी सेल के संयुक्त तत्वावधान में संविधान दिवस पर पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय भारतीय संविधानः सामाजिक उत्थान का एक साधन रखा गया। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्षा डॉ. ममता रानी के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कॉलेज प्राचार्य डॉ. नरेश कुमार दुआ ने विद्यार्थियों से कहा कि सभी नागरिकों से संविधान के आदर्शों का पालन करें। प्रतियोगिता में रविना ने प्रथम, प्रियंका ने द्वितीय, खुशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, जबकि अंश को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम में डॉ. शालिनी शर्मा, डॉ. गुरविंद्र सिंह और तिलक राज ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाते हुए महत्वपूर्ण सहयोग दिया। मौके पर उर्मिल दलाल, डॉ. रितूलाल, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. सुमन, डॉ. प्रोमिला मौजूद रहे।

शहीदी शताब्दी पर गुरु नानक दरबार में श्रद्धा व सेवा का समागम

रोहतक। समागम में मौजूद संगत।

रोहतक। श्री गुरु तेग बहादुर साहिब की 350वीं शहीदी शताब्दी के उपलक्ष्य में गुरुद्वारा गुरु नानक दरबार, शिवाजी कॉलोनी में विशेष धार्मिक समागम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भाई अरुणदीप सिंह, भाई जसबीर सिंह जींद वाले और ज्ञानी गुरविंदर सिंह रतक, हेड ग्रंथी गुरुद्वारा मंजी साहिब जींद, विशेष रूप से पहुंचे। संगत ने गुरबाणी कीर्तन और गुरमत कथा विचार सुनकर आध्यात्मिक शांति का अनुभव किया। विद्वानों ने बताया कि गुरु तेग बहादुर साहिब जी ने कश्मीरी पंडितों की पुकार पर आनंदपुर साहिब से दिल्ली पहुंचकर हिंदू धर्म और मानवता की रक्षा के लिए अपना शीश समर्पित किया। उनके साथ भाई मती दास, भाई सती दास और भाई दयाल ने भी शाहादत देकर धर्म की रक्षा की। गुरुद्वारा साहिब के मीत प्रधान सरदार परमजीत सिंह ने बताया कि भारी संख्या में संगत ने उत्साहपूर्वक समागम में भाग लिया और गुरु साहिब की याद में अरदास की। इस अवसर पर विशेष लंगर का भी प्रबंध किया गया। समागम में प्रधान सरदार राजेंद्र सिंह चिटकारा सहित कई गणमान्य मौजूद रहे।

नगर निगम स्वच्छता मानकों से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेगा, नियम तोड़ने वालों को दी चेतावनी

पावर हाउस चौक पर निगम की कार्रवाई, दुकानदार से करवाया कचरा साफ

- सभी निवासी अपनी जिम्मेदारी को समझें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

पावर हाउस चौक क्षेत्र में शनिवार को नगर निगम की टीम ने स्वच्छता व्यवस्था का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों को एक दुकान के बाहर सार्वजनिक स्थल पर अवैध रूप से फेंका गया कचरा दिखाई दिया, जिससे आसपास गंदगी फैल रही थी और राहगीरों सहित स्थानीय लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए निगम टीम ने तुरंत कार्रवाई की और संबंधित दुकानदार को मौके पर ही स्वयं कचरा उठाकर साफ-सफाई करने के निर्देश दिए। दुकानदार ने निगम टीम की मौजूदगी में गंदगी को हटाया। इसके अतिरिक्त, स्वच्छता नियमों का उल्लंघन करने पर उसका चालान भी काटा गया।

कचरा निर्धारित स्थान पर ही डालें

रोहतक। पावर हाउस चौक क्षेत्र में नगर निगम की टीम कार्रवाई करती हुई

नगर निगम अधिकारियों ने बताया कि शहर को स्वच्छ और व्यवस्थित रखने के उद्देश्य से नियमित रूप से ऐसे निरीक्षण अभियान चलाए जा रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि सार्वजनिक स्थानों पर कचरा फेंकने, गंदगी फैलाने या सफाई व्यवस्था में बाधा डालने वालों के खिलाफ भविष्य में भी इसी प्रकार की कठोर कार्रवाई जारी रहेगी। निगम का मानना है कि नागरिकों की छोटी-सी लापरवाही भी शहर की समग्र स्वच्छता व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इसलिए आवश्यक है कि सभी निवासी अपनी जिम्मेदारी को समझें और कचरा केवल निर्धारित डस्टबिन या निगम द्वारा तय किए गए स्थानों पर ही डालें।

अभियान चल रहा

अधिकारियों ने यह भी बताया कि शहर में स्वच्छता को लेकर निगम लगातार जागरूकता अभियान चला रहा है, ताकि लोग साफ-सफाई के प्रति सजग रहें और अपने आसपास गंदगी न होने दें। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे न केवल स्वयं स्वच्छता का ध्यान रखें बल्कि अपने आस-पास होने वाली अव्यवस्था या गंदगी फैलाने की किसी भी गतिविधि को देखते ही तुरंत नगर निगम को सूचित करें, जिससे समय रहते उचित कार्रवाई की जा सके।

सभी सक्रिय योगदान दें

निगम अधिकारियों का कहना है कि रोहतक शहर को स्वच्छ, सुंदर और स्वास्थ्यवर्धक वातावरण प्रदान करना उनका प्राथमिक लक्ष्य है, और इसमें नागरिकों की सहभागिता बेहद महत्वपूर्ण है। पावर हाउस चौक पर की गई यह कार्रवाई इस बात का स्पष्ट संकेत है कि नगर निगम स्वच्छता मानकों से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेगा। यह कदम न केवल नियम तोड़ने वालों के लिए चेतावनी है, बल्कि अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणा है कि वे अपनी जिम्मेदारी को समझें और स्वच्छता अभियान में सक्रिय योगदान दें।

मुख्य मार्गों व राजीव गांधी स्टेडियम में चला विशेष सफाई अभियान

रोहतक। सफाई करते कर्मचारी।

रोहतक। शहर को स्वच्छ, स्वस्थ और व्यवस्थित बनाए रखने के लिए नगर निगम रोहतक लगातार फील्ड में सक्रिय है। निगम की टीमें प्रतिदिन विभिन्न मुख्य मार्गों, बाजारों तथा सार्वजनिक स्थलों पर सफाई व्यवस्था की निगरानी कर रही हैं और गंदगी फैलाने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जा रही है। शनिवार निगम टीम द्वारा शहर के मुख्य मार्गों एवं राजीव गांधी स्टेडियम परिसर में विशेष सफाई अभियान चलाया गया। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि कुछ स्थानों पर दुकानदारों एवं राहगीरों द्वारा निर्धारित स्थानों के अतिरिक्त खुले में कूड़ा फेंका जा रहा था, जिससे आसपास गंदगी की स्थिति उत्पन्न हो रही थी। नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर मौके पर ही संबंधित व्यक्तियों से सफाई करवाई करवाई गई तथा भविष्य में गंदगी न फैलाने की चेतावनी देते हुए चालान भी किया गया। निगम द्वारा प्रतिदिन गंदगी फैलाने वालों, डस्टबिन न रखने वालों तथा सड़क पर कचरा डालने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध कार्रवाई की जा रही है। टीमों को निर्देश दिए गए हैं कि जहां भी कूड़ा अनियमित रूप से पाया जाए, वहां तुरंत सफाई करवाकर संबंधित दोषियों पर चालान किया जाए। निगम का उद्देश्य शहर में कूड़े के ढेरों को कम करना, स्वच्छता व्यवस्था को मजबूत करना तथा नागरिकों में साफ-सफाई के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। नगर निगम ने सभी नागरिकों, दुकानदारों एवं संस्थानों से अपील की है कि वे निर्धारित डस्टबिन का उपयोग करें, कूड़ा सड़क पर न फेंके और स्वच्छता बनाए रखने में निगम का सहयोग करें। निगम टीमों द्वारा गंदगी फैलाने वालों पर आगे भी इसी प्रकार सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

नवंबर में जरूरी कामों को निपटाएं, 1 दिसंबर से नियम बदलेंगे

नवंबर महीना जल्द खत्म होने वाला है और कई सरकारी और वित्तीय कामों की आखिरी तारीख भी पास आ गई है। अगर आपने अभी तक ये काम पूरे नहीं किए हैं, तो 30 नवंबर से पहले पूरा कर लें। 1 दिसंबर से कई नियम बदल जाएंगे।

सरकारी कर्मचारियों के लिए यूपीएस चुनने की आखिरी तारीख

- सरकारी कर्मचारियों के लिए यूनिफाइड पेंशन स्कीम चुनने की डेडलाइन 30 नवंबर है। पहले यह तारीख 30 सितंबर थी, लेकिन बाद में बढ़ा दी गई। यूपीएस, एनपीएस से अलग है और इसे चुनने का मौका सीमित समय तक ही है।
- पेंशनर्स के लिए लाइफ सर्टिफिकेट जमा करने की डेडलाइन
- पेंशनर्स को अपना लाइफ सर्टिफिकेट 30 नवंबर तक जमा करना होगा। इसे समय पर जमा न कराने पर पेंशन रोकने का खतरा हो सकता है।

टैक्स फाइलिंग और जरूरी रिपोर्ट

- अक्टूबर 2025 में टीडीएस कटने वाले टैक्सपेयर्स को सेक्शन 194-Iए, 194-Iबी, 194एम और 194एस के तहत बयान 30 नवंबर तक जमा करना अनिवार्य है। सेक्शन 92ई के तहत रिपोर्ट देने वाले टैक्सपेयर्स भी 30 नवंबर तक आईटीआर फाइल कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय ग्रुप की कॉन्स्टीट्यूएंट एंटिटीज़ के लिए फॉर्म 3सीईएए जमा करने की आखिरी तारीख भी यही है।

एलपीजी सिलेंडर की कीमत में बदलाव

- ऑयल मार्केटिंग कंपनियां हर महीने की पहली तारीख को एलपीजी की कीमतें अपडेट करती हैं। 1 दिसंबर को भी नए दाम लागू होंगे। 1 नवंबर को 19 किलो वाले कॉमर्शियल सिलेंडर की कीमत 6.50 रुपए तक घटाई गई थी।

एविएशन टरबाइन फ्यूल की कीमत

- एलपीजी की तरह एटीएफ की कीमतों में भी हर महीने बदलाव होता है। 1 दिसंबर को एटीएफ के दाम बढ़ सकते हैं या कम हो सकते हैं। नवंबर खत्म होने से पहले इन जरूरी कामों को पूरा करना बेहद जरूरी है, क्योंकि 1 दिसंबर से नियम और तारीखें बदल जाएंगी।

स्टॉक मार्केट की नब्ज पकड़ना नहीं आसान, इन बातों का रखें विशेष ध्यान

निवेश मंत्रा
विनोद गौतम

दरअसल अनिश्चितता से भरे शेयर ट्रेडिंग में भावों के उतार-चढ़ाव को समझना ही सबसे बड़ी चुनौती होती है। जो ट्रेडर यह समझते हैं कि मुनाफा कमाना बड़ा लक्ष्य है, वे अक्सर घाटा खाते हैं, जबकि भावों की भाषा को पढ़ने वाले कुल मिलाकर फायदे में रहते हैं, क्योंकि किसी भी शेयर के भावों में ही छिपा रहता है उसका भूत, वर्तमान और भविष्य, बस इसे पढ़ने के लिए सधी और पैनी नजर चाहिए। अब सवाल है कि भावों की भाषा पढ़ी कैसे जाए। इसका एक प्रमुख माध्यम है टेक्निकल एनालिसिस।

टेक्निकल एनालिसिस का क्या है अर्थ

टेक्निकल एनालिसिस का अर्थ है किसी स्टॉक के मार्केट डाटा का सूक्ष्म अध्ययन करके उसकी संभावित कीमत का अनुमान लगाना। इसमें मुख्य रूप से दो बातों पर गौर किया जाता है। भाव और ट्रेडिंग की मात्रा यानी वॉल्यूम। सरल शब्दों में कहा जाए तो टेक्निकल एनालिसिस के तहत देखा जाता है कि किसी खास समय अवधि में किसी स्टॉक की कीमत में कितना उतार-चढ़ाव आया। इस अवधि में इसकी ट्रेड की गई संख्या में क्या कभी कोई बड़ा उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है।

नियमित व अनुशासित निवेश ही करें

इक्विटी मार्केट में निवेश एक अनुशासन है। इसे तोड़ने पर जोखिम उठाना पड़ सकता है। लेकिन यह देखा गया है कि निवेश के फैसलों में अपवाद को नियम मान लेने की चूक कई लोगों करते हैं। मसलन, आम धारणा है कि इक्विटी फंड में एकमुश्त निवेश नहीं करना चाहिए। इक्विटी फंड में निवेश एसआईपी के जरिये करना चाहिए, ताकि समय के साथ लागत की एवरेजिंग होती रहे। ऐसा करने के कई फायदे हैं। फिर भी, कई लोगों के पोर्टफोलियो इस नियम का पालन नहीं करते हैं और वे इसकी वजहें भी बताते हैं कि मुझे एक बार में यह रकम मिली थी और किसी ने मुझे बताया कि इसे एकबार में ही इस फंड में लगा देना चाहिए या मुझे पता है कि सेक्टर फंड्स से अभी परहेज करना चाहिए, लेकिन यह तो साफ दिख रहा है कि इंफ्रास्टक्चर का हाल बेहतर होने वाला है, तो मैंने इंफ्रा फंड में एक बार में ही मोटी रकम लगा दी या इक्विटी में उतार-चढ़ाव होता रहता है, लिहाजा मैंने एफडी में 10 साल के लिए यह रकम लगा दी। ये तो एफडी की तरह ही हैं। ये तमाम तर्क टिपिकल हैं और इनमें से ज्यादातर मामलों में निवेशक ने सोच-समझकर निवेश नियमों का उल्लंघन करने का निर्णय किया होता है। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे खुद को अपनी तर्क बुद्धि से या सलाहकार की मदद से यह समझा ले जाते हैं कि मौजूदा हालात में आम नियम का रास्ता छोड़ना फायदेमंद होगा।

ऐसे समझें

निवेश में अनुशासन व नियमों को समझने के लिए यहां एक उदाहरण पेश है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा का एक डॉक्यूमेंट है। 'पावर ऑफ टेन' के नाम से। इसे नासा के कंप्यूटर साइंटिस्ट गेरार्ड होल्जमैन ने तैयार किया था। इसमें सेफ्टी-क्रिटिकल सॉफ्टवेयर डिवप्प करने के 10 नियम बताए गए हैं। इसके रिसर्च के दौरान होल्जमैन ने पाया था कि अगर नियमों का पालन किया जाए, तो उन्हें कानून की तरह मानना होगा, न कि दिशानिर्देश की तरह। और कुछ ही नियमों का होना बेहतर है, जिनका कभी उल्लंघन न हो। निवेश पर यह उदाहरण बिल्कुल फिट बैठता है। कहने का मतलब कि निवेश के नियमों में अपवाद की कोई जगह नहीं है। हमेशा बुनियादी नियमों का पालन करना चाहिए। और यह नियम है कि इक्विटी में कभी भी एकमुश्त निवेश नहीं करें। न ही सीधे शेयर बाजार में और न ही म्यूचुअल फंड में। अपने पोर्टफोलियो में विविधता रखें, एसआईपी अपनाएं, नियमित निवेश का पैटर्न अपनाएं। कभी कभार हो सकता है कि ऐसे हालात बनें, जिनमें निवेश के बुनियादी नियमों के उल्लंघन से बेहतर रिटर्न मिले, लेकिन ऐसे मामले नाममात्र के ही होते हैं।

ट्रेडिंग के जरूरी सूत्र

1. ट्रेडर के लिए सबसे अहम है भावों की भाषा
2. टेक्निकल एनालिसिस से समझें भावों की धड़कन
3. टेक्निकल एनालिसिस में चार्ट का अध्ययन अहम
4. ट्रेडर को प्राइस व वॉल्यूम का आकलन करना चाहिए
5. टेक्निकल एनालिसिस से ट्रेंड अनुमान लगा सकते हैं

टेक्निकल व फंडामेंटल एनालिसिस में अंतर

फंडामेंटल एनालिसिस में जहां हम लंबे निवेश के नजरिए से कंपनी के अतीत और वर्तमान को कसौटी पर कसने की कोशिश करते हैं, वहीं टेक्निकल एनालिसिस मूल रूप से भावों की तात्कालिक गणना पर आधारित पद्धति है। इसका उद्देश्य ट्रेडर की मदद करना होता है। फिर चाहे वह ट्रेडर इंट्रा डे हो या फिर शॉर्ट टर्म ट्रेडर। फंडामेंटल एनालिसिस में हम कंपनी की आय, उसके द्वारा दिए गए लाभांश और शोध जैसी बातों को अपने अध्ययन का आधार बना सकते हैं।

ऐसे करें एनालिसिस

टेक्निकल एनालिसिस में इनमें से कुछ संकेतकों का उपयोग किया जा सकता है लेकिन इसमें मुख्य रूप से कुछ विशेष टूल्स और तकनीक का इस्तेमाल किया जता है। इन विशेष साधनों में एक है चार्ट का अध्ययन। चार्टों के जरिए टेक्निकल एनालिसिस करने वाला ट्रेडर दो अहम चीजों पर ध्यान देता है- पहला प्राइस मूवमेंट और दूसरा शेयर का ट्रेंड। अगर कोई शेयर आपके द्वारा निर्धारित कीमत से दो फीसदी गिर भी जाता है तो मुमकिन है कि वह अपट्रेंड हो। यानी उसमें मुनाफा वसूली या किसी और वजह से थोड़े वक्त के लिए करेक्शन आया हो लेकिन वह जल्द ही फिर से रफ्तार पकड़ सकता है। टेक्निकल एनालिसिस के जरिए हम समझने की कोशिश करते हैं कि किस सीमा के बाद कोई शेयर दिशा बदल सकता है।

कई तरह के चार्ट पैटर्न

टेक्निकल एनालिसिस में काम आने वाले चार्ट पैटर्न भी कई तरह के होते हैं। जैसे- हेड एंड शोल्डर, डबल टॉप या बॉटम वगैरह। इसके अलावा जो चीज टेक्निकल एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है, वह है मूविंग एवरेज। मूविंग एवरेज पर अलग से चर्चा करेंगे, फिलहाल हम आपको उसका एक परिचय देते चलें। मूविंग एवरेज का अर्थ है कि कोई शेयर किसी खास अवधि में किस औसत भाव के साथ मूव कर रहा था। इसका आकलन लगाने में हम कुछ और तकनीकी बिंदुओं पर गौर कर करते हैं, जैसे, सपोर्ट और रेजिस्टेंस। टेक्निकल एनालिसिस के जरिए शेयर के भावों का अर्थशास्त्र समझने में मदद मिलती है।

शेयर बाजार में क्या है अपर सर्किट और लोअर सर्किट?

क्यों घटता-बढ़ता है शेयर का मूल्य?

सामान्य निवेशक इस बात को लेकर कभी कभी बहुत हैरान रहते हैं कि शेयर का मूल्य किस हिसाब से बढ़ता और घटता रहता है। शेयर का मूल्य दो कारणों से बढ़ता या घटता रहता है। पहला कारण शेयर की सप्लाई और डिमांड और दूसरा कारण कंपनी द्वारा मुनाफा कमाना या कंपनी का घाटा। लेकिन, अगर हम स्टॉक ट्रेडिंग में देखें तो शेयर की सप्लाई और डिमांड की वजह से अधिकतर शेयर का मूल्य घटता बढ़ता रहता है। जब भी शेयर की डिमांड बढ़ती है यानी ज्यादा लोग खरीदते हैं तो उसका दाम बढ़ जाता है। और, जब लोग शेयर को बेचना स्टार्ट कर देते हैं तब शेयर का मूल्य घटने लगता है यह इस तरह से काम करता है।

लोअर सर्किट को ऐसे समझें

मान लीजिए आपके पास किसी कंपनी का शेयर हैं। किसी वर्ष के दौरान उस कंपनी को किसी कारणवश घाटा लगना शुरू हो जाता है। ऐसे में आप उस कंपनी का शेयर बेचने लगेंगे। ऐसे ही बहुत से लोग जो उस कंपनी के शेयर को लिए होंगे वह भी बेचना शुरू कर देंगे। जब सब बेचना शुरू कर देंगे तो एक ही दिन में उस कंपनी का शेयर शून्य तक पहुंच सकता है। ऐसी स्थिति में शेयर का मूल्य एक निश्चित सीमा तक गिरे इसके लिए एमएसई तथा बीएसई स्टॉक एक्सचेंज ने कुछ नियम बनाए हैं। जिनके अंतर्गत जब किसी कंपनी में अचानक सब लोग शेयर बेचना शुरू कर दें तो एक निश्चित सीमा तक ही उस शेयर का मूल्य घटेगा। उसके बाद उस शेयर की ट्रेडिंग बंद हो जाएगी। यह जो मूल्य घटने की सीमा है, उसे ही लोअर सर्किट कहते हैं।

कैसे काम करता है अपर सर्किट

अपर सर्किट को एक उदाहरण के जरिए समझते हैं। मान लीजिए कि आपके पास किसी कंपनी के शेयर हैं। उस कंपनी को खूब मुनाफा होता है या किसी कारणवश उस कंपनी में निवेशकों की रूचि बढ़ जाती है। ऐसे में उस कंपनी के शेयर का दाम खूब चढ़ने लगता है। ऐसे में किसी कंपनी के शेयर का मूल्य एक ही दिन में आसमान में पहुंच जाएगा। इसी हालत से बचने के लिए शेयर बाजार में अपर सर्किट का प्रावधान है। उस निश्चित मूल्य सीमा तक उस कंपनी के शेयर का दाम पहुंचते ही उसमें अपर सर्किट लग जाएगा और उसकी ट्रेडिंग बंद हो जाएगी। जिस तरह से लोअर सर्किट पर 10, 15 और 20 फीसदी का नियम लागू होता है, वही नियम अपर सर्किट पर भी लागू होता है। लोअर सर्किट के तीन चरण होते हैं। यह 10 फीसदी, 15 फीसदी और 20 फीसदी की गिरावट पर लगता है। यदि 10 फीसदी की गिरावट दिन में 1 बजे से पहले आती है, तो बाजार में एक घंटे के लिए कारोबार रोक दिया जाता है। इसमें शुरुआती 45 मिनट तक कारोबार पूरी तरह रुका रहता है और 15 मिनट का प्री-ओपन सेशन होता है।

क्या आपके पीएफ अकाउंट में भी सितंबर-अक्टूबर का कंट्रीब्यूशन नहीं दिख रहा

उन सैलरीड कर्मचारियों को चिंता करने की जरूरत नहीं है जिनके पीएफ पासबुक में सितंबर और अक्टूबर 2025 की सैलरी से कटे पैसे अभी तक नहीं दिख रहे हैं। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने कहा है कि ये सिर्फ एक अस्थायी तकनीकी दिक्कत है, जल्दी ठीक हो जाएगी। ईपीएफओ अपना नया और अपग्रेडेड इलेक्ट्रॉनिक चालान-कम-रिटर्न सिस्टम लॉन्च कर रहा है। इसलिए हाल के महीनों की पीएफ एंट्री फेज में डाली जा रही हैं। इसी वजह से कुछ लोगों की पासबुक में सितंबर-अक्टूबर के पैसे अभी गायब या अधूरे दिख रहे हैं।

पासबुक लाइट से होगी आसानी

बता दें कि ईपीएफओ ने हाल ही में 'पासबुक लाइट' नाम की नई सुविधा शुरू की है। इसमें आप देख सकते हैं कि आपके खाते में कितना पैसा जमा हुआ, कितना निकला और अभी कितना बचा हुआ है। मतबल जरूरी जानकारी के लिए आसान सुविधा शुरू की गई है। ये सुविधा मेंबर पोर्टल पर ही उपलब्ध है। इसके लिए अलग से पासबुक वाली वेबसाइट पर जाने की जरूरत नहीं पड़ती। साथ ही इससे ट्रैफिक ज्यादा होने पर भी सिस्टम हैंग भी नहीं होता और जल्दी जानकारी मिल जाती है।

ई-सेवा पोर्टल पर पीएफ पासबुक कैसे चेक करें

- यूएएन मेंबर ई-सेवा पोर्टल पर जाएं।
- अपना यूएएन, पासवर्ड डालें और ओटीपी से लॉगिन करें।
- डैशबोर्ड पर 'पासबुक लाइट' चुनें, वहां से स्टेटमेंट देखें या डाउनलोड करें।

उमंग ऐप पर पासबुक कैसे देखें

- उमंगऐप में लॉगिन करें।
- ईपीएफओ सर्विस सर्च करें और 'व्यू पासबुक' पर क्लिक करें।
- यूएएन डालें, ओटीपी से वेरीफाई करें, अपना मेंबर आईटी चुनें और ई-पासबुक डाउनलोड कर लें।

ऑनलाइन पीएफ क्लेम करने के लिए क्या-क्या चाहिए

- ऑनलाइन क्लेम डालने वाले मेंबर्स को ये चीजें पहले से पूरी करनी जरूरी हैं:
- यूएनएन एक्टिवेट होना चाहिए और उससे जुड़ा मोबाइल नंबर काम कर रहा हो।
- आधार लिंक और ओटीपी से वेरीफाई होना चाहिए।
- बैंक अकाउंट डिटेल्स ईपीएफओ में अपडेट होनी चाहिए।
- अगर सर्विस 5 साल से कम है और फाइनल सेटलमेंट करना है तो पेन भी लिंक होना चाहिए।

जैसे-जैसे ईपीएफओ नया सिस्टम पूरी तरह लागू करेगा, सितंबर-अक्टूबर 2025 के पीएफ पैसे जल्दी ही सभी की पासबुक में दिखने लगेंगे।

यूपीआई वेरिफिकेशन से लेकर 'स्पॉट ए स्कैम' टूल तक, निवेशकों को फ्रॉड से बचाने के लिए सेबी के सुझाव

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के चेयरमैन तुहिन कांत पांडेय ने निवेशकों की सुरक्षा को मजबूत करने की जरूरत बताई। उन्होंने आगाह किया कि नॉन-रजिस्टर्ड एडवाइजर ग्रुप, लोगों को असुरक्षित कारोबारी माध्यम की ओर आकर्षित कर रहे हैं और इसलिए अवैध कारोबार के मामले नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। बीएसई के एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि इस दौर में जहां गलत सूचनाएं तथ्यों से अधिक तेजी से प्रसारित होती हैं, यह चुनौती और भी बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि इसलिए, निवेशक सुरक्षा को मजबूत करना नियामक की प्रमुख प्राथमिकता बन गया है। योजनाओं की पहचान करने में और अधिक सहायता करने के लिए 'स्पॉट ए स्कैम टूल' पेश किया है, जो यूजर्स की ऑनलाइन प्रामाणिकता सत्यापित करने में मदद करता है। पांडेय ने बताया कि सेबी ने पिछले 18 महीनों में मेटा, गूगल, टेलीग्राम और एक्स सहित सोशल मीडिया एवं सर्च मंचों पर गैरकानूनी या भ्रामक ऑनलाइन सामग्री के एक लाख से अधिक मामलों को चिह्नित किया है। उन्होंने कहा कि इसके अनुरूप विनियमित संस्थाओं को सोशल मीडिया पर अनियमित सलाहकारों के साथ जुड़ने की अनुमति नहीं है, जिससे झूठे दावों व हानिकारक पेशकशों के प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी।

यूपीआई से जुड़ा एक मान्य ढांचा पेश किया

सेबी ने इन प्रयासों के तहत यूपीआई से जुड़ा एक मान्य ढांचा पेश किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पेमेंट सिर्फ सेबी रजिस्टर्ड मध्यस्थों की प्रामाणिक यूपीआई आईडी पर ही किए जाएं। बाजार नियामक ने जांच सुविधा का भी विस्तार किया गया है जिससे निवेशक 'सेबी इन्वेस्टर' वेबसाइट और सारथी मोबाइल ऐप पर बैंक खातों की वास्तविकता की तुरंत पुष्टि कर सकते हैं। यह समझते हुए कि धोखाधड़ी की गतिविधि बिना किसी चेतावनी के हो सकती है निवेशक अब स्वेच्छा से अपने लेनेदने के खातों को 'फ्रीज' या 'ब्लॉक' कर सकते हैं। यह ठीक वैसे ही है जैसे 'हैक' किए गए डेबिट कार्ड को 'ब्लॉक' किया जाता है। यह विकल्प तत्काल सुरक्षा प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

गारंटीड रिटर्न के वादे से रहें सावधान

कारोबार संबंधी धोखाधड़ी वाले ऐप विश्वसनीय लगते हैं, डिजिटल खाते वैधता का दिखावा करते हैं और पक्के रिटर्न का वादा करने वाली ऐसा योजनाएं पेश करते हैं जो कोई भी रेगुलेटेड मार्केट नहीं दे सकता। बाजार नियामक के प्रमुख ने खतरे की गंभीरता को दोहराते हुए कहा कि ऐसे "नॉन-रजिस्टर्ड एडवाइजर ग्रुप, लोगों को असुरक्षित ट्रेड प्लेटफॉर्म की ओर आकर्षित करते हैं और इसलिए अवैध कारोबार के मामले नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि अवैध कारोबार के मामले कोई छिटपुट घटनाएं नहीं हैं, बल्कि निवेशकों के विश्वास, जिज्ञासा और आकांक्षाओं का फायदा उठाने के समन्वित प्रयास हैं। इसलिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि लोग 'अवसर की आड़ में धोखे' का शिकार न हों।

अलर्ट हर साल गुजरना पड़ता है इस प्रक्रिया से, जानकारी होना जरूरी

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट स्वीकार हुआ या नहीं, इस चिंता में हैं? ऐसे चुटकियों में करें चेक

पेंशन जारी रखने के लिए सालाना लाइफ सर्टिफिकेट जमा करना एक जरूरी काम होता है। लेकिन, बहुत से बुजुर्गों की सबसे बड़ी चिंता यही रहती है कि उनका डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बैंक या पेंशन डिपार्मेंट ने एक्सेप्ट कर लिया या नहीं। नीचे हम जानेंगे कि यह पूरा सिस्टम कैसे काम करता है, इसमें क्या-क्या जानकारी देनी पड़ती है। साथ ही इसमें सबसे जरूरी काम यह पता करना होता है कि आपका सर्टिफिकेट एक्सेप्ट हो गया या नहीं। लाइफ सर्टिफिकेट एक आधार आधारित डिजिटल सर्टिफिकेट है। इससे पेंशन लेने वाले व्यक्ति के जीवित होने की पुष्टि हो जाती है, वो भी बिना बैंक या डिपार्टमेंट के चक्कर लगाए। जैसे ही आप इसे बनाते हैं, यह इलेक्ट्रॉनिक तरीके से आपके पेंशन देने वाले बैंक या डिपार्टमेंट तक पहुंच जाता है। हर सर्टिफिकेट का एक अलग प्रमाण-आईडी नंबर होता है, जिससे आप और डिपार्टमेंट दोनों उसकी स्थिति देख सकते हैं।

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बनाते समय आपको ये जानकारी डालनी होती है

⏭ आधार नंबर और नाम ⏭ रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर ⏭ पेंशन पेमेंट ऑर्डर नंबर ⏭ पेंशन खाते का नंबर और बैंक का नाम ⏭ पेंशन मंजूर करने वाले डिपार्टमेंट और पेंशन देने वाले बैंक/डिपार्टमेंट का नाम ⏭ इसके बाद फिंगरप्रिंट, आंख की स्कैन या चेहरे की पहचान (बायोमेट्रिक) देनी जरूरी है। अगर कोई भी जानकारी गलत हुई तो सर्टिफिकेट रिजेक्ट हो सकता है। इसलिए बहुत ध्यान से भरें, क्योंकि 30 नवंबर की डेडलाइन नजदीक है।

चेहरे की पहचान से कैसे बनाएं सर्टिफिकेट

अगर आप फेस ऑथेंटिकेशन तरीका इस्तेमाल करना चाहते हैं तो आपके पास एंड्रॉयड फोन होना चाहिए। दो ऐप डाउनलोड करें **adhaarFaceRD** और **Jeevan Pramaan Face App**।
आगे ये करें : आधार से वेरीफाई करें, पेंशन की सारी डिटेल भरें साफ-साफ अपना चेहरा फोटो खिंचवाएं, काम पूरा होने पर आपके रजिस्टर्ड, मोबाइल पर मैसेज आएगा और डाउनलोड लिंक भी मिल जाएगा।

सबसे जरूरी: पता करें कि आपका सर्टिफिकेट एक्सेप्ट हुआ या नहीं , सर्टिफिकेट जमा करने के बाद यह जरूर चेक करें कि बैंक/डिपार्टमेंट ने उसे मंजूर किया है या नहीं। तरीका बहुत आसान है। ऑफिशियल वेबसाइट **jeevanpramaan.gov.in** पर जाएं, अपना प्रमाण-आईडी डालकर सर्टिफिकेट डाउनलोड करें, सर्टिफिकेट के सबसे नीचे मैसेज देखें, अगर लिखा हो कि पीडीए ने एक्सेप्ट कर लिया, मतलब काम हो गया।

अगर रिजेक्ट लिखा हो तो तुरंत नया सर्टिफिकेट सही जानकारी और बायोमेट्रिक के साथ बनवाएं।

अगर दिसंबर से पहले सही सर्टिफिकेट जमा नहीं हुआ तो पेंशन रुक सकती है। इसलिए अभी समय है, आज ही चेक कर लें और जरूरत पड़े तो दोबारा जमा कर दें।

पारिवारिक वसीयत में सही हिस्सा नहीं मिला? जानें, क्या है कानून और कोर्ट में क्या माना जाता है सबूत

परिवार में वसीयत को लेकर झगड़े अक्सर रिश्तों को बिखेर देते हैं। अगर वसीयत में हिस्से बराबर न हों या लगे कि कोई बाहर से दखल दे रहा था, तो मामला और उलझ जाता है। लेकिन कानून के मुताबिक, सिर्फ असमानता देखकर वसीयत को चुनौती नहीं दी जा सकती। यहां बहुत मजबूत सबूत चाहिए। अगर परिवार पहले से ही सही कदम उठाएं, तो लंबी अदालती लड़ाई और पैसे की बर्बादी से बच सकते हैं। खैतान एंड कंपनी की पार्टनर ज्योति सिन्हा बताती हैं कि ऐसे मामलों में सही जानकारी होना जरूरी है, वरना छोटी-छोटी बातें नजरअंदाज हो जाती हैं।

छिपे हुए संकेत जो नजर नहीं आते

परिवार वाले अक्सर उन छोटे-छोटे इशारों को मिस कर देते हैं, जो वसीयत में गड़बड़ी की ओर इशारा करते हैं। सिन्हा कहती हैं कि अगर कोई फायदा उठाने वाला शख्स लंबे समय से टेस्टेटर (वसीयत बनाने वाला) के करीब रहा हो और फैसले प्रभावित करने की कोशिश करता दिखे, तो ये दबाव या अनुचित प्रभाव का संकेत हो सकता है। इसके अलावा, वसीयत में हस्ताक्षर में कुछ असामान्य हो, जैसे डॉक्टर का सर्टिफिकेट न होना जो दिमागी हालत की पुष्टि करे, या जहां काट-पीट हुई हो वहां इनिशियल्स न हों, तो ये चेतावनी के घंटे हैं। ये चीजें खुद-ब-खुद वसीयत को अमान्य नहीं बनातीं, लेकिन जांच की जरूरत बताती हैं। सिन्हा की सलाह है कि इन पर गौर करके जल्दी कदम उठाएं, क्योंकि वक्त बीतने पर सबूत गुम हो सकते हैं।

सबूत जुटाने की जल्दबाजी क्यों?

समय बहुत कीमती है ऐसे मामलों में। सिन्हा कहती हैं कि वसीयत बनाने के वक्त की घटनाओं का टाइमलाइन बनाएं, टेस्टेटर की शारीरिक और मानसिक स्थिति के बारे में जानकारी इकट्ठा करें। असली हस्ताक्षर के नमूने, फोटो, चिट्ठियां या ईमेल जैसे दस्तावेज रखें, जो ये साबित करें कि वसीयत प्राकृतिक है या संदिग्ध। परिवार अक्सर सोचते हैं कि उनके पास जो कागज हैं, वो बेकार हैं, लेकिन सिन्हा की राय है कि सब कुछ वकील को दिखाएं। वो तय करेंगे कि क्या काम आएगा। अगर देर की, तो महत्वपूर्ण चीजें खो सकती हैं।

अदालतें कैसे काम करती हैं?

जज लोग वसीयत पर दस्तखत करते वक्त की परिस्थितियों को गौर से जांचते हैं। सिन्हा बताती हैं कि क्या टेस्टेटर आजाद था, उसे सब समझ आ रहा था? बीमारी, नशा या कोई ऐसी चीज जो फैसले पर असर डाले, उसकी जांच होती है। अनुचित प्रभाव साबित करना काफी मुश्किल है, क्योंकि कानूनी स्तर ऊंचा है।

अगर वसीयत से बाहर कर दिया गया तो?

वसीयत से नाम कटना अकेले चुनौती का आधार नहीं होता। सिन्हा कहती हैं कि पहले देखें कि बिना वसीयत के संपत्ति कैसे बंटती। अगर कोई कानूनी वारिस 'अप्राकृतिक बहिष्कार' का दावा करता है, तो वो सेल्फ-अक्वायर्ड संपत्ति के लिए मुश्किल से मान्य होता है, लेकिन पैतृक संपत्ति के लिए काम कर सकता है। ऐसे में कोई कदम उठाने से पहले वकील से बात जरूर करें, क्योंकि मामला जटिल है।

खबर संक्षेप

रोहतक। आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते प्रोफेसर डॉ. अनुराग खटकड़।

एमडीयू डॉ. अनुराग खटकड़ हुए सम्मानित

रोहतक। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के फार्मास्यूटिकल साइंसेज विभाग के प्रोफेसर डॉ. अनुराग खटकड़ ने इनोवेटिव फार्मेसी कॉलेज, नोएडा में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर विशिष्ट अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में शिरकत की। बिल्डिंग ब्रिड्जस एंड फोस्टरिंग कोलैबोरेशन बिटवीन द एकेडेमिया एंड द फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्रीज विषय पर आयोजित इस प्रतिष्ठित सम्मेलन में देशभर के शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और उद्योग विशेषज्ञों ने भाग लिया। शोभित यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. रंजीत सिंह और एआईएमआईएल फार्मास्यूटिकल लिमिटेड, नई दिल्ली के वाइस प्रेसिडेंट डॉ. अनिल वर्मा की गरिमामयी उपस्थिति इस अवसर पर रही। प्रो. अनुराग खटकड़ ने फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में शैक्षणिक अनुसंधान और उद्योगों के सहयोग को समय की आवश्यकता बताया। उन्होंने कहा कि नवाचार, गुणवत्तापूर्ण शोध तथा उन्नत तकनीकों को विकसित करने के लिए विश्वविद्यालयों और उद्योगों के बीच मजबूत साझेदारी अत्यंत आवश्यक है।

अभी दो दिन जारी रहेगी श्रीकृष्ण लीलाओं की प्रस्तुति

मुरादाबाद के कलाकारों ने श्रीकृष्ण लीलाओं का किया सजीव चित्रण

तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन पंडित श्रीराम शर्मा रंगशाला में किया जा रहा है

हरिभूमि न्यूज

रोहतक। तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन पंडित श्रीराम शर्मा रंगशाला में किया जा रहा है। इसका शुभारंभ मेयर रामअवतार वाल्मीकि ने प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ किया। सूचना जनसंपर्क एवं भाषा विभाग द्वारा श्रीमद्भागवद् गीता तथा महाभारत युद्ध पर आधारित भव्य प्रदर्शनी आयोजित की गई है, जिसमें मुख्यमंत्री के साथ-साथ अन्य महापुरुषों के संदेश एवं गीता के बारे में उनके विचार प्रदर्शित किए गए है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का हरियाणावासियों के नाम संदेश भी इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया है। मुख्यमंत्री के संदेश में कहा गया है कि धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र की धरा को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की जन्म स्थली और आध्यात्मिक चिंतन का प्राचीनतम केंद्र माना जाता है। कुरुक्षेत्र के जल, थल एवं वायु तीनों ही मुक्ति के प्रदाता है। इसी पवित्र भूमि पर लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व महाभारत का धर्म युद्ध लड़ा गया था। कुरुक्षेत्र की रणभूमि पर ही योगेश्वर श्रीकृष्ण के मुख से गीता का ज्ञान प्रभावित हुआ और भारत को गीता का अमूल्य ग्रंथ प्राप्त हुआ। श्रीमद्भागवद् गीता सभी धर्मों का सार और सदमार्ग दिखाने के लिए संसार में एक अद्वितीय प्रकाश स्तंब है। देश की इस गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत से जन-जन को परिचित करवाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव आयोजित किया जा रहा है। प्रदर्शनी में भारत विकास परिषद द्वारा लोगों को जीवन के दौरान रक्तदान करने तथा मृत्यु के उपरांत अंगदान करने का संदेश स्टॉल के माध्यम से दिया जा रहा है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नगराधीश अंकित कुमार, मंडल आयुक्त के ओएसडी शुभम, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी राजपाल चहल व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का शुभारंभ पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत से हुआ। इसके उपरांत शिक्षा भारती कन्या स्कूल की छात्राओं ने कृष्ण लीलाओं की भव्य प्रस्तुति दी। पठानिया पब्लिक स्कूल की छात्रा ने एकल कथक की प्रस्तुति दी। वैश्य पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी ने श्रीकृष्ण भक्ति पर भव्य गायन की प्रस्तुति दी। पठानिया स्कूल के विद्यार्थियों ने अर्धनारीश्वर की भव्य प्रस्तुति से दर्शकों की खुब तालिया बटौरी। इसी विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह नृत्य की भी दर्शकों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

रोहतक। जिला स्तरीय कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देते प्रतिभागी।

लीला कला मंच की टीम ने दी भव्य प्रस्तुतियां

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में लीला कला मंच की कलाकारों द्वारा हरियाणवी संस्कृति पर आधारित भव्य प्रस्तुतियां दी गई। कला मंच की कलाकारों ने एकल नृत्य की प्रस्तुतियों से दर्शकों की तालियां बटौरी। प्रसिद्ध डॉ. पंकज दर्पण अग्रवाल द्वारा निर्देशित मुरादाबाद की टीम ने कृष्ण लीलाओं की भव्य प्रस्तुति दी। टीम द्वारा कृष्ण लीलाओं का शुभारंभ गणेश वंदना से किया गया। इसके उपरांत टीम के कलाकारों ने महाराजा कंस के पृथ्वी पर हुए हत्याचारों का सजीव चित्रण किया गया। पृथ्वी तथा साधु संतों, ब्रह्मा एवं शिव की प्रर्थना पर भगवान विष्णु ने देवकी व वासुदेव की संतान के रूप में जन्म लेने आश्वासन दिया। कलाकारों द्वारा वासुदेव व देवकी की विवाह तथा विदाई के साथ-साथ भविष्यवाणी का भी चित्रण किया गया, जिसके अनुसार देवकी की आठवीं संतान के हाथों महाराजा कंस की हत्या बताई गई।

रोहतक। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को सम्मानित करते मुख्यअतिथि मेयर रामअवतार वाल्मीकि ,नगराधीश अंकित कुमार, मंडल आयुक्त के ओएसडी शुभम, पंचायत अधिकारी राजपाल चहल व जिला शिक्षा अधिकारी मनजीत मलिक।

42 साधकों को मिली ओंकार दीक्षा

अहंकार से ओंकार की यात्रा ही अध्यात्म : आचार्य दर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

ओशोधारा नानक धाम मुरथल आश्रम के समर्थगुरु सिद्धार्थ औलिया के निर्देशन में ओमेक्स सिटी स्थित रोहतक मेडिटेशन सेंटर में आयोजित ध्यान योग कार्यक्रम के दूसरे दिन ओंकार दीक्षा समारोह का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ । इस आध्यात्मिक आयोजन में कुल 42 साधकों को ओंकार दीक्षा प्रदान की गई। दीक्षा समारोह का संचालन ओशोधारा के केंद्रीय समन्वयक आचार्य दर्शन ने किया। आचार्य दर्शन ने कहा कि अहंकार से ओंकार की यात्रा ही अध्यात्म का सार है। उन्होंने समझाया कि ओंकार, जिसे विभिन्न परंपराओं में राम, शब्द, लोगोस, वाणी या आस्मानी नामों से जाना जाता है, वास्तव में आत्मा की वही अनाहद ध्वनि है जो साधक को भीतर की यात्रा की ओर ले जाती है और जीवन में एक नया आंतरिक प्रकाश भरती है। इससे पहले अंबाला से विशेष रूप से पधारी वरिष्ठ आचार्या संजीला, आचार्य दलशेर और आचार्य अनहद ने समर्पण, संकल्प और अन्य साधना पर आधारित प्रभावशाली सत्र लिए।

दीक्षा प्राप्त करने वालों में ये रहे शामिल

भगवान गौतम बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग पर आधारित इस ध्यान कार्यक्रम में अनेक नए साधक विशेष उत्साह के साथ भाग ले रहे हैं। आज नाद एवं माला दिशा प्राप्त करने वालों में डॉक्टर सतबीर दहिया, हितेश, कंचन, दिलख़ुश, रामदेव गोस्वामी, रतन सैनी, संतोष देवी, अमन, अशोक, सुरेश डांगी, डॉक्टर सीमा फोगाट, सुनीता, मोनिका, जिला समन्वयक डॉ. परमवीर फोगाट, विजय बोहर और प्रेस मीडिया समन्वयक संदीप नैन शामिल रहे।

सांगवान स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव का समापन

हरिभूमि न्यूज. रोहतक

सांगवान इंटरनेशनल स्कूल के एसएसबी ग्राउंड में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव का समापन उत्साह, उमंग और प्रतिस्पर्धात्मक भावना के साथ हुआ। दूसरे दिन के मुख्य अतिथि विद्यालय के प्रबंधक राजेश सांगवान रहे, जिनकी उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। कक्षा 6 से 9 तथा 11 के विद्यार्थियों के बीच विभिन्न एथलेटिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर और 800 मीटर दौड़ में प्रतिभागियों ने शानदार प्रदर्शन किया। लेमन स्पून रेस, थ्री-लेग रेस, रिले रेस और डिस्क थ्रो जैसी प्रतियोगिताओं ने कार्यक्रम में रोमांच और मनोरंजन का रंग भरा। महोत्सव में खेलों के साथ सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी आकर्षण का केंद्र रहीं। 'वीर शिवाजी' पर आधारित प्रेरणादायक नृत्य ने छत्रपति शिवाजी महाराज के पराक्रम और देशभक्ति को प्रभावशाली रूप से दर्शाया। विद्यालय गीत ने पूरे परिसर में जोश और गर्व का वातावरण बना दिया। मुख्य अतिथि राजेश सांगवान, प्रधानाचार्या मनीषा सांगवान और समन्वयक प्रमिला सांगवान ने विजेता विद्यार्थियों को मेडल व प्रमाण पत्र प्रदान किए।

प्रतिभागियों को 1100-1100 का दिया पुरस्कार

प्रबंधन ने उत्कृष्ट प्रस्तुतियों से प्रसन्न होकर सभी प्रतिभागियों को 1100-1100 रुपये की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की। पूरे सत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर मानेकशा सदन को ओवरऑल ट्रॉफी और अर्जन सदन को द्वितीय स्थान की ट्रॉफी प्रदान की गई। कार्यक्रम में उपप्रधानाचार्या ऋतु विज, एडमिन इंचार्ज मीनू हुड्डा मौजूद रहे।

एनएसएस इकाइयों के एकदिवसीय शिविर का समापन

रोहतक। अखिल भारतीय गौशाला पहरावर में महारानी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय की एनएसएस इकाइयों द्वारा एक दिवसीय शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में सामाजिक एवं पर्यावरणीय गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें सभी स्वयंसेविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर की प्रमुख गतिविधियों में गोशाला परिसर तथा पहरावर गांव में वृक्षारोपण शामिल रहा, जिसमें नीम, पीपल, शीशम, कदम्ब और बरगद के पौधे लगाए गए। स्वयंसेविकाओं ने गोद लिए गए गाँव पहरावर में भी वृक्षारोपण किया तथा सेवा भावना के साथ गौमाता को चारा खिलाया। कार्यक्रम नगर निगम के सहयोग से संपन्न हुआ। स्वयंसेविकाओं ने स्वच्छता, प्लास्टिक-त्याग और पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर लोगों को जागरूक किया। "स्वच्छ भारत – स्वस्थ भारत" संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए रैली भी निकाली गई, जिसमें विद्यार्थियों ने स्वच्छता और स्वास्थ्य से जुड़े नारों के माध्यम से आमजन को प्रेरित किया। गौशाला में गायों को चारा खिलाकर स्वयंसेविकाओं ने पशु-सेवा और करुणा का संदेश दिया। पूरा कार्यक्रम एनएसएस प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. सविता मलिक के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। महाविद्यालय की गीता ने स्वयंसेविकाओं का उत्साहवर्धन किया।

हरियाणा ग्रामीण बैंक के स्थापना दिवस पर निकाली साइकिल रैली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

हरियाणा ग्रामीण बैंक के 13वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को बैंक के कर्मचारियों द्वारा एक भव्य साइकिल रैली का आयोजन किया गया। रैली की शुरुआत एग्रो मॉल से हुई और यह बैंक के मुख्यालय तक पहुंची। बैंक के अधिकारी एवं कर्मचारी पूरे उत्साह और जोश के साथ इस रैली में शामिल हुए और स्थापना दिवस का उल्लासपूर्वक जश्न मनाया। बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि बीते 12 वर्षों में हरियाणा ग्रामीण बैंक ने ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को मजबूती प्रदान की है। बैंक ने किसानों, छोटे व्यवसायियों और ग्रामीण नागरिकों को सरल और सुलभ बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराई हैं। इस प्रकार के उत्सव न केवल कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाते हैं, बल्कि समाज और ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक की सकारात्मक छवि को भी मजबूती प्रदान करते हैं। बैंक आगे भी ग्रामीण लोगों को वित्तीय समावेशन और बेहतर सेवाएँ उपलब्ध कराने के अपने लक्ष्य को लगातार आगे बढ़ाता रहेगा।

कर्मचारियों में टीम भावना का विकास

अधिकारियों ने यह भी कहा कि इस प्रकार के आयोजन न केवल कर्मचारियों में टीम भावना को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि बैंक की समाज के प्रति प्रतिबद्धता को भी दर्शाते हैं। साइकिल रैली के माध्यम से कर्मचारियों ने एकजुट होकर यह संदेश दिया कि बैंक अपने ग्राहकों और समाज की सेवा के लिए हमेशा तत्पर है। हरियाणा ग्रामीण बैंक अपने स्थापनाकाल से ही ग्रामीण और सामाजिक विकास के लिए प्रतिबद्ध रहा है।

विश्व शांति महायज्ञ के दूसरे दिन भक्तिमय वातावरण में विविध धार्मिक अनुष्ठान संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

सिविल रोड स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर सराय मोहल्ला में श्री दिगंबर जैन सोसाइटी द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय श्रीमद् जिनेन्द्र वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ के दूसरे दिन भक्तिमय वातावरण में विविध धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुए। श्रद्धालुओं ने साधु–संतों की पावन छत्र-छाया में पूरी श्रद्धा और भक्ति भाव से पूजा-अर्चना एवं विधान किए। मीडिया प्रभारी राजीव जैन ने बताया कि महोत्सव के दूसरे दिन प्रातः 7 बजे आर्यिका रत्न डॉ. सरस्वती भूषण माता संघ के मंगल आशीर्वाद से श्रीजी का अभिषेक एवं महा शांतिधारा का आयोजन हुआ, जिसे सुरेन्द्र जैन भटगांव वाले परिवार द्वारा संपन्न किया गया। इसके उपरांत उपस्थित श्रद्धालुओं ने भी सामूहिक अभिषेक किया। प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी निति के निर्देशन में नित्य नियम पूजन व याग मंडल विधान संपन्न हुआ। कार्यक्रम मंदिर संरक्षक विजय कुमार जैन तथा एलपीएस बोसार्ड के डायरेक्टर राजेश जैन की अध्यक्षता में संपन्न हो रहे हैं। संस्था की ओर से आगंतुक अतिथियों का मोती की माला, पटका और स्मृति-चिह्न भेंटकर सम्मान किया गया। श्रद्धालुओं के लिए शुद्ध वात्सल्य भोजन की विशेष व्यवस्था की गई। इस अवसर पर प्रधान अतुल जैन, महामंत्री अजय जैन, चक्रेश जैन, राजेश जैन डीएलएफ, शलेष जैन, अनिल जैन, मनोज जैन, विकास दलाल, सुनील जैन, अनुराग जैन, सरीता जैन, मधु जैन, सतीश जैन आदि रहे।

रोहतक। पूजा अर्चना करते भक्तजन।

रोहतक। —पूजा अर्चना करते भक्तजन।

तीन दिवसीय कला कार्यशाला का भव्य समापन शिक्षकों की कलाकृतियों ने मोहा का मन

रोहतक। सोनीपत और रोहतक जिलों के टीजीटी कला अध्यापकों के लिए आयोजित तीन दिवसीय संभाग स्तरीय कला कार्यशाला का आज मनमोहक प्रदर्शनी के साथ भव्य समापन हुआ। यह कार्यशाला जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी दलजीत के मार्गदर्शन तथा उप जिला शिक्षा अधिकारी राजबाला मलिक के कुशल निर्देशन में संपन्न हुई। कार्यक्रम के अंतिम दिन आयोजित प्रदर्शनी इस पूरे आयोजन का मुख्य आकर्षण बनी, जिसमें अध्यापकों की रचनात्मकता और नवीन प्रयोगों की झलक देखने को मिली। तीन दिनों तक चले इस प्रशिक्षण सत्र में कला अध्यापकों को विभिन्न कला शैलियों, तकनीकों और आधुनिक उपकरणों के उपयोग के बारे में गहन जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों ने कई उत्कृष्ट कलाकृतियों का निर्माण किया, जिन्हें समापन दिवस पर प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में कैनवास पेंटिंग, पॉट डेकोरेशन (मटका सजावट), पारंपरिक वारली पेंटिंग, गुजरात की प्रसिद्ध लिप्पन कला, आकर्षक स्लोगन लेखन और जीवंत स्केचिंग जैसी विविध कला विधाओं का उत्कृष्ट संगम नजर आया। कलाकृतियों की बारीकी, रंग-संयोजन और कलात्मक संतुलन ने उपस्थित सभी दर्शकों का मन मोह लिया। समापन समारोह को संबोधित करते हुए कार्यशाला समन्वयक डॉ. सुनीता अहलावत ने प्रतिभागी अध्यापकों के उत्साह, सहभागिता और समर्पण की सराहना की। उन्होंने कहा कि कला केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं बल्कि विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच विकसित करने का एक प्रभावी साधन भी है। डॉ. अहलावत ने शिक्षकों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि वे सीखी गई सभी तकनीकों का प्रभावी उपयोग अपने विद्यालयों में करें, ताकि विद्यार्थियों में कला के प्रति रुचि और कौशल दोनों का विकास हो सके। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दीं। कार्यक्रम में मास्टर ट्रेनर्स और सहायक अध्यापक भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा तैयार की गई कलाकृतियों की सराहना करते हुए उन्हें निरंतर अभ्यास और नवाचार के लिए प्रेरित किया। आयोजकों ने बताया कि यह प्रशिक्षण क्रम उच्च अधिकारियों के निर्देशानुसार आगे भी जारी रहेगा। इस कार्यशाला का अगला बैच सोमवार से आरंभ होगा और संपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम 10 दिसंबर तक चलेगा। कला अध्यापकों को बेहतर मंच और संसाधन प्रदान करने की इस पहल को सभी स्तरों पर सराहना मिल रही है।

जेपी स्कूल में सड़क सुरक्षा विषय पर प्रतियोगिता

रोहतक। सुरक्षित ट्रैफिक मिशन हम सबका विषय पर जन आक्रोश संस्था, नागपुर (महाराष्ट्र) की रोहतक शाखा द्वारा जेपी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर-36 सनसिटी में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कक्षा 5वीं से 7वीं तक के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए सड़क सुरक्षा से जुड़े संदेशों को चित्रों और स्लोगनों के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान संस्था द्वारा सड़क दुर्घटनाओं और उनसे बचाव संबंधी वृत्तचित्र भी दिखाए गए, जिनके माध्यम से बच्चों ने यातायात नियमों, सुरक्षित ड्राइविंग और सड़क पर जिम्मेदार व्यवहार के महत्व को समझा। स्कूल के निदेशक राजीव मलिक एवं गौरव मलिक ने बच्चों को ट्रैफिक नियमों का पालन करने और दूसरों को भी जागरूक करने के लिए प्रेरित किया। संस्था के शाखा प्रमुख बलबीर सिंह और विष्णु मित्र सैनी ने सड़क दुर्घटनाओं के भयावह आंकड़े साझा करते हुए बताया कि देश में हर वर्ष लाखों दुर्घटनाएँ होती हैं, जिनमें बड़ी संख्या में युवा जान गंवाते हैं।

कबड्डी टूर्नामेंट के दूसरे दिन दिखाई प्रतिभा

किलोई में खेलों का रोमांच चरम पर, सीआईएसएफ की दोहरी जीत, एसपीसी किलोई बना कबड्डी चैंपियन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

स्पोर्ट्स प्रमोशन क्लब, किलोई द्वारा आयोजित 39वां डॉ. रामधन सिंह मेमोरियल आमंत्रण बास्केटबॉल एवं कबड्डी टूर्नामेंट अपने दूसरे दिन रोमांचक मुकाबलों, खिलाड़ियों की उत्कृष्ट प्रतिभा और दर्शकों के उत्साहपूर्ण समर्थन के साथ पूरी शिद्दत से खेला गया। बास्केटबॉल और कबड्डी दोनों ही मैदानों पर खिलाड़ियों ने फिटनेस, फुर्ती, अनुशासन और टीम भावना की शानदार मिसाल पेश की। संदीप हुड्डा ने बताया कि बास्केटबॉल प्रतियोगिता में पहले ही मुकाबले में सीआईएसएफ ने 18 रैपिड को 80-60 से हराकर अपने अभियान की दमदार शुरुआत की। दूसरे मैच में बीएसएफ ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए खेल प्रमोशन क्लब किलोई को 75-62 से पराजित किया। तीसरे मुकाबले में चंडीगढ़ की टीम ने शानदार तालमेल के साथ खेलते हुए पैक अकादमी को 78-63 से हराया। चौथे मैच में भी सीआईएसएफ ने अपना दबदबा कायम रखते हुए उत्तर प्रदेश को 56–28 से मात देकर दिन की अपनी दूसरी जीत दर्ज की। डॉ. जनक राज ने बताया कि कबड्डी के आज खेले गए सभी मैच दर्शकों की तालियों से गूंजते रहे।

शैक्षणिक नेतृत्व की महत्ता पर रखे सारगर्भित विचार

रोहतक। शैक्षणिक संस्थानों के सुचारु संचालन के लिए प्रभावी नेतृत्व, स्पष्ट मिशन–विजन और प्रशासनिक दक्षता अनिवार्य तत्व हैं। महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डॉ. कृष्णकांत ने यह विचार मालवीय मिशन टीचर ट्रेनिंग सेंटर, एमडीयू द्वारा आयोजित आठ दिवसीय ओरिएंटेशन और सेंसिटाइजेशन कार्यक्रम के छठे दिन व्यक्त किए। यह कार्यक्रम पं. नेकी राम शर्मा राजकीय महाविद्यालय, रोहतक के सहयोग से संचालित हो रहा है। रजिस्ट्रार डॉ. कृष्णकांत ने एकेडमिक लीडरशिप एंड मैनेजमेंट विषय पर दो विस्तृत और रोचक सत्रों का संचालन किया।

DAV PUBLIC SCHOOL
JAGDISH COLONY/KAMLA NAGAR, ROHTAK
(UNDER THE AEGIS OF DAV COLLEGE MANAGING COMMITTEE, NEW DELHI)
E-mail: davdlfkn@gmail.com
Contact No. 01262-269279
Tender Notice for Sale of Old Bus
Quotations are invited for Sale of old bus HR-46D-7369, 29 Seater, Model 2015, expired in May 2025. Interested person may contact from 9.00 A.M. to 1 P.M at school reception on all working days. Last date for quotations 10.12.2025.
Manager Principal

रस्म पगड़ी

स्व. श्री भारत भूषण गोयल
(पूर्व महासचिव वैश्य एजुकेशन सोसायटी रोहतक)
(24.10.1969 - 21.11.2025)
आपको अत्यंत दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारे प्रिय श्री भारत भूषण गोयल (पुत्र श्री महादेव प्रसाद गोयल पूर्व प्रधान वैश्य एजुकेशन सोसायटी रोहतक) दिनांक 21.11.2025 को अपनी सांसारिक यात्रा पूरी कर प्रभु चरणों में विलीन हो गए हैं।
उनकी आत्मिक शांति हेतु श्रद्धांजलि सभा एवं रस्म पगड़ी सोमवार, दिनांक 1 दिसम्बर 2025, ब्रह्म भोज : दोपहर 12:00 से 2.00 बजे, रस्म पगड़ी : दोपहर 2:00 से 3.00 बजे स्थान: महारानी लक्ष्मी बाई कम्यूनिटी सेंटर, सेक्टर-2, रोहतक पर होगी।
शोकाकुल परिवार
श्रीमती अंजू गोयल (पत्नी), शैलजा गोयल (पुत्री)
नमन गोयल एवं शिजा गोयल (पुत्र एवं पुत्रवधू), शायरा (दयोती), काव्यांश (पौत्र)
MAHADEV PACKAGING PVT. LTD.
Kharawar Gandhra Link Road, Rohtak
M.P. HEAT
184, New HSIIDC, Hissar Road, Rohtak
समस्त गोयल परिवार डीघल वाले
सम्पर्क सूत्र : 9996455434, 9812019825

खबर संक्षेप

स्वदेशी अपनाने के लिए रेल यात्रियों को किया जागरूक

सांपला। भारतीय जनता पार्टी द्वारा आत्मनिर्भर भारत जनजागरण अभियान के अंतर्गत सांपला रेलवे स्टेशन पर जनसंपर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मार्केट कमेटी चेयरमैन उदयभान मलिक तथा वाइस चेयरमैन बंसी लाल मक्कड़ ने रेल यात्रियों को आत्मनिर्भर भारत के संकल्प, उसके उद्देश्य और राष्ट्रहित में इसके महत्व के बारे में विस्तार से अवगत कराया। चेयरमैन उदयभान मलिक ने बताया कि आत्मनिर्भर भारत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से देश के समग्र विकास के लिए लिया गया एक महत्वपूर्ण संकल्प है, जिसका उद्देश्य देश को आर्थिक रूप से मजबूत, आत्मनिर्भर और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है। उन्होंने कहा कि स्वदेशी वस्तुओं को अपनाकर न केवल देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है, बल्कि भारत राजनीतिक, औद्योगिक, सामाजिक और वैश्विक मंच पर भी अधिक सशक्त बनकर उभरता है।

26 वर्ष की सेवाओं के बाद डॉ. दीपक सेवानिवृत्त

रोहतक। राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय की भूगोल विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. दीपक मलिक 26 वर्षों की उत्कृष्ट सेवाओं के उपरांत सेवानिवृत्त हो गईं। महाविद्यालय परिवार की ओर से उन्हें मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया गया और भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी गईं। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शमशेर सिंह ने कहा कि डॉ. दीपक मलिक का शैक्षणिक योगदान हमेशा याद रखा जाएगा। उन्होंने बताया कि हजारों छात्र-छात्राओं ने उनसे शिक्षा प्राप्त कर प्रेरणा ली है। डॉ. दीपक मलिक के पति डॉ. कृष्ण मलिक ने भी अपने संबोधन में कहा कि वह न केवल एक कुशल शिक्षिका हैं, बल्कि एक जिम्मेदार मां और आदर्श गृहणी भी हैं, जिनके सान्निध्य से परिवार में हमेशा खुशियों का वातावरण रहता है।

खिलाड़ी की मौत पर सरकार की पांच लाख की मदद पर पिता बोले

बेटे के नाम पर बने इंडोर स्टेडियम, युवा होंगे प्रेरित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

खिलाड़ी हार्दिक राठी।

हार्दिक के पिता संदीप राठी।

नेशनल बास्केटबॉल खिलाड़ी हार्दिक राठी की मौत के बाद हरियाणा सरकार ने परिवार को पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने का ऐलान किया है। परंतु इस घोषणा के बाद हार्दिक के पिता संदीप राठी ने भावुक होते हुए कहा कि उन्हें यह आर्थिक मदद नहीं चाहिए। उनका कहना है कि यह राशि उनका बेटा वापस नहीं ला सकती, इसलिए सरकार हार्दिक के नाम से गांव में एक इंडोर स्टेडियम बनाए। संदीप राठी ने कहा कि इंडोर स्टेडियम बनने से गांव के बच्चे सर्दी, गर्मी और बारिश जैसी कठिन परिस्थितियों में भी सुरक्षित वातावरण में अभ्यास कर सकेंगे। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि खेल सुविधाओं को व्यवस्थित रखने के लिए एक कमेटी बनाई जाए, जो मैदान और उपकरणों की देखरेख करे और यह सुनिश्चित करे कि कोई भी लापरवाही भविष्य में किसी बच्चे की जान का कारण न बने। पिता ने बताया कि जिस मैदान पर हार्दिक अभ्यास करता था, वहां बास्केटबॉल का नया पोल लगना बाकी था। अगर पोल समय पर लग जाता या व्यवस्थाएं ठीक रहतीं, तो उनका बेटा आज जीवित होता। उन्होंने कहा कि खेल क्षेत्र में सुरक्षा सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए, क्योंकि खिलाड़ी रोजाना कई जोखिम उठाते हुए मेहनत करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि हार्दिक के सपने गांव के बच्चों में जिंदा हैं, इसलिए सरकार यदि उसके नाम से इंडोर स्टेडियम बना दे तो यह उसके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्टेडियम के लिए टेंडर प्रक्रिया जारी : एक्सईएन

गांव के पंचायती स्टेडियम के लिए 11 नवंबर को काम शुरू होना था जो शुरू नहीं हुआ है। पंचायतीराज विभाग के एक्सईएन नवीन कुमार ने कहा कि गांव के युवाओं ने स्टेडियम का मिट्टी भरत की बात कहते हुए कुछ समय बाद काम शुरू करने की अपील की थी। इसका इंतजार किया जा रहा है। विभाग काम करने के लिए तैयार है। इसके लिए बजट आ गया है। गांव के खरैंटी रोड स्थित राजीव गांधी स्टेडियम की मरम्मत के लिए टेंडर प्रक्रिया जारी है। इसके लिए 12 लाख रुपये आ चुके हैं।

सुविधाओं को बढ़ावा

परिवार का मानना है कि खेल प्रतिभाओं को उभारने के लिए गांव और कस्बों में सुविधाओं का बढ़ना बहुत जरूरी है। स्टेडियम बनने से बच्चे बेहतर प्रशिक्षण ले सकेंगे और राज्य व देश के लिए खेलने का मौका पा सकेंगे। हार्दिक हमेशा कहता था कि गांव के बच्चों को अच्छे संसाधन मिलने चाहिए, तभी वे बड़े सपने देख पाएंगे। पिता ने उम्मीद जताई कि सरकार उनकी इस मांग पर गंभीरता से विचार करेगी ताकि भविष्य में ऐसी दर्दनाक घटनाएं दोबारा न हों। गांव के लोगों ने भी हार्दिक के पिता की मांग का समर्थन किया है और कहा है कि यह स्टेडियम न केवल हार्दिक की याद को संजोएगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित भी करेगा।

स्कॉलर्स रोजरी स्कूल में गरिमापूर्ण ढंग से मनाया संविधान दिवस

■ छात्रों ने प्रस्तावना का सामूहिक पाठ कर संवैधानिक मूल्यों के प्रति दिखाई निष्ठा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

स्कॉलर्स रोजरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में संविधान दिवस बड़े सम्मान और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। विद्यालय के डॉयरेक्टर रवि गुगनानी और मुख्याध्यापिका प्रति गुगनानी के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन फर्स्ट हरियाणा एनसीसी बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल सुखविंदर सिंह और प्रशासनिक अधिकारी कर्नल अमन चौधरी, रोहतक के तत्वाधान में किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण छात्रों एवं कर्मचारियों द्वारा भारतीय संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पठान रहा।

प्रतियोगिताओं का किया आयोजन

इस अवसर पर पोस्टर मेकिंग, भाषण एवं कविता पठन जैसी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी प्रतिभा और संविधान के प्रति जागरूकता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय के एनसीसी अधिकारी कपिल एवं एनसीसी ड्रिल इंस्ट्रक्टर की उपस्थिति में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही, 16 से 22 नवंबर तक विद्यालय में सात दिवसीय एनएसएस शिविर का भी सफल आयोजन किया गया। इस शिविर में विद्यार्थियों ने शैक्षणिक भ्रमण, रचनात्मक गतिविधियों, सामाजिक सेवाओं तथा विशेष सत्रों में सक्रिय भागीदारी निभाई। होली हार्ट अस्पताल के श्री राजवीर द्वारा विद्यार्थियों को जीवनरक्षक सीपीआर प्रशिक्षण दिया गया, जबकि कैप्टन नकुल ने प्रेरणादायी करियर काउंसलिंग सत्र लेकर छात्रों का मार्गदर्शन किया। शिविर का समापन 22 नवंबर को रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ हुआ, जिसमें जिला कोऑर्डिनेटर मनोज अहलावत की विशेष उपस्थिति रही। समापन कार्यक्रम ने छात्रों के उत्साह और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को नई दिशा प्रदान की।

एसपी कार्यालय में सेवानिवृत्त अधिकारियों का विदाई समारोह आयोजित

रोहतक। पुलिस विभाग में लंबी और समर्पित सेवा देने वाले चार अधिकारियों का आज पुलिस अधीक्षक कार्यालय के सभागार में विदाई समारोह आयोजित कर सम्मान किया गया। उप पुलिस अधीक्षक दलीप सिंह ने सेवानिवृत्त अधिकारियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनके उज्जवल भविष्य और स्वास्थ्य की कामना की। सेवानिवृत्त अधिकारी निरीक्षक राजेश कुमार, हॉनरेरी निरीक्षक जगबीर, हॉनरेरी निरीक्षक भुपेंद्र और हॉनरेरी निरीक्षक हितेन्दर। उप पुलिस अधीक्षक दलीप सिंह ने इस अवसर पर कहा कि इन अधिकारियों ने अपने जीवन के सबसे कीमती वर्ष पुलिस विभाग को समर्पित किए हैं। उनका अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने बताया कि पुलिस विभाग में कार्य करना कठिन होता है, जहाँ सिर्फ जवान ही नहीं, बल्कि उनके परिवार को भी अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। उप पुलिस अधीक्षक ने आगे कहा कि सेवानिवृत्त अधिकारी विभाग में सम्मानपूर्वक सेवा देने के बाद भी समाज और पुलिस विभाग में सहयोग करते रहेंगे।

उन्होंने सभी अधिकारियों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए धन्यवाद देते हुए उनकी भविष्य की योजनाओं में सफलता की शुभकामनाएं दीं। समारोह में उपस्थित अन्य पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी सेवानिवृत्त अधिकारियों को भावभीन्द रूप से विदाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

रोहतक। सूरज रसवंत को रोहतक व्यापार मण्डल का शहरी अध्यक्ष नियुक्त करने पर स्वागत करते दुकानदार।

सूरज रसवंत बने रोहतक व्यापार मंडल के शहरी अध्यक्ष

रोहतक। जल्द ही व्यापार मण्डल का राज्य स्तरीय सम्मेलन व्यापारी प्रतिनिधि सम्मेलन आयोजित किया जायेगा ।हरियाणा के मुख्यमंत्री से जल्द ही व्यापारियों का प्रतिनिधिमण्डल चड़ीगढ में मिलेगा । रोहतक, हरियाणा उधोग व्यापार हित मण्डल के प्रदेश अध्यक्ष अनिल भाटिया ने व्यापारी नेता सूरज रसवंत को रोहतक व्यापार मण्डल का शहरी अध्यक्ष नियुक्त किया हैं । उन्होने कहा कि सूरज रसवंत रोहतक शहर के व्यापारियों को एकजुट करके उनकी समस्याओं को प्रशासन के समक्ष रखकर हल करवाने में अथक प्रयास करेगें । अनिल भाटिया ने कहा कि रोहतक में जल्द ही व्यापार मण्डल का राज्य स्तरीय सम्मेलन व्यापारी प्रतिनिधि सम्मेलन आयोजित किया जायेगा । जिसमें व्यापार व उधोग को बढ़ाव देने, टैक्सों में सरलीकरण करने, भ्रष्ट अधिकारियों पर नकेल डालने, छोटे व मध्यम व्यापारियों के व्यापार को बढ़ाने देने पर विचार किया जायेगा्र। बैठक के दौरान प्रदेश उपाध्यक्ष नंदकिशोर कपूर, पूर्व निगम पार्षद अमर अरोड़ा, प्रदेश प्रवक्ता ललित मोहन सैनी, नरेन्द्र गुप्ता, नीरज शर्मा, दर्शनलाल अरोड़ा, प्रमोद रोहिल्ला, गगन वधवा, हितेश बागड़ी, जिवेश रसवंत, राजकिशन नारंग, योगेश्वर सैनी, जगदीप खनखड़, विरेन्द्र गोसाईं, अजय जोशी व मिथुन इत्यादि मौजूद रहें ।

नारी शक्ति और संस्कार से ओत-प्रोत प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को बनाया यादगार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

■ शिक्षा भारती विद्यालय में 'सप्तशक्ति संगम' का भव्य आयोजन

शिक्षा भारती विद्यालय जेपी कॉलोनी में "सप्तशक्ति संगम" का भव्य और प्रेरणादायी आयोजन बड़ी गरिमा के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन रजनी शर्मा ने किया। मुख्य अतिथि रेनू डाबला, मुख्य वक्ता डॉ. पिंक प्रभा, द्वितीय वक्ता पुष्पा शर्मा, कार्यक्रम अध्यक्षा बृजबाला और विद्यालय प्राचार्या आशु साहनी सहित सभी विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। समन्वयक सरोज, राजदुलारी और मधु ने अतिथियों को स्मृति-चिह्न भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का आरंभ सांस्कृतिक गीत नव युग का नव विचार आया तथा समूह गीत "हम ही मातृशक्ति हैं" से हुआ, जिसने वातावरण को उत्साह और आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। छात्राओं ने ऐतिहासिक एवं प्रेरणादायी महिलाओं के रूप में प्रभावशाली प्रस्तुतियां दीं—आचार्या ज्योति और निकुंज ने झांसी की रानी का, सिद्धि ने चेनम्मा का, अंशिका ने अहिल्याबाई होल्कर का और सोनी ने जीजाबाई का चरित्र जीवंत किया। प्रश्नोत्तरी, अनुभव-साझा और प्रेरक संदेश कार्यक्रम की विशेष आकर्षण रहे। प्राचार्या आशु साहनी ने गीता में वर्णित नारी की सप्त शक्तियों कीर्ति, मुख्य अतिथि रेनू डाबला ने कहा कि अवसर मिलने पर महिला हर असंभव कार्य संभव कर सकती है। पुष्पा शर्मा ने पर्यावरण संरक्षण और अभिभावक उत्तरदायित्व पर सारगर्भित विचार रखे। अंत में सभी ने संस्कारों को जीवित रखने, नारी-सममान, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक कर्तव्य पालन का संकल्प लिया।

रोहतक। सेवानिवृति पर प्रो. जेएस सिक्का को विदाई देते कुलपति प्रो राजबीर सिंह,डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. एस. सी. मलिक, कुलसचिव डॉ. कृष्णकांत व अन्य स्टाफ।

गणित विभाग के प्रोफेसर डॉ. जेएस सिक्का सेवानिवृत्त

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) के गणित विभाग के प्रतिष्ठित प्रोफेसर डॉ. जेएस सिक्का अपने 35 साल के गौरवपूर्ण सेवाकाल पूर्ण कर सेवानिवृत्त हो गए। इस अवसर पर कुलपति कार्यालय में आयोजित विदाई समारोह में कुलपति प्रो राजबीर सिंह समेत एमडीयू समुदाय ने प्रो. जेएस सिक्का को भावभीनी विदाई दी और उनके स्वस्थ-समृद्ध जीवन की शुभकामनाएं दी। समारोह के दौरान डॉ. सिक्का के तीन दशकों से अधिक लंबे शैक्षणिक योगदान, शोध कार्य, विद्यार्थियों के प्रति समर्पण और विश्वविद्यालय के विकास में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को बड़े आदर के साथ याद किया गया। कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने उन्हें स्मृति-चिन्ह और पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए कहा कि डॉ. सिक्का ने अपनी मेहनत, अनुशासन और उत्कृष्ट शिक्षण शैली से गणित विभाग को नई दिशा और पहचान दी। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी कार्यनिष्ठा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी। डॉ. जे. एस. सिक्का ने विदाई कार्यक्रम में भावुक होते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन, सहकर्मियों और विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि एमडीयू में उनकी यात्रा सीखने, सिखाने और निरंतर प्रगति से भरी रही, जिसे वे जीवन भर याद रखेंगे। कार्यक्रम के अंत में अधिकारियों और साथियों ने उन्हें उज्ज्वल भविष्य और स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं देते हुए सम्मान पूर्वक विदाई दी।

लोक जनशक्ति पार्टी का स्थापना दिवस मनाया

रोहतक। लोक जनशक्ति पार्टी का स्थापना दिवस रोहतक में उत्साह, जोश और भारी जनउपस्थिति के साथ मनाया गया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर एलजेपी हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष स्वयं रोहतक पहुंचे, वहीं रोहतक जिला अध्यक्ष वेद प्रकाश पाण्डेय ने कार्यक्रम की पूरी जिम्मेदारी संभाली और आयोजन को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और पार्टी संस्थापक स्व. राम विलास पासवान जी को श्रद्धांजलि देकर की गई। कार्यक्रम में विभिन्न ब्लॉकों से आए पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इस अवसर पर परदेस अध्यक्ष श्री प्रवीण सभरवाल, जिला अध्यक्ष वेद प्रकाश पाण्डेय, नीरज बशिष्ठ प्रदेश अध्यक्ष लीगल सलाहकार, अजीत कुमार श्रीवास्तव, मिथिलेश पाण्डेय वकील साह, संजय साह प्रमोद सिंह, सचिन सैनी पप्पू सिंह, परमिला हुडा, इत्यादि लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम राष्ट्रगान और धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20,
फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नही हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

नन्हे बच्चों ने प्रस्तुतियों से मन जीता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

■ जॉन वेस्ले कॉन्वेंट में हिंदी स्टोरी टेलिंग प्रतियोगिता का सफल आयोजन

जॉन वेस्ले कॉन्वेंट में नर्सरी से कक्षा दूसरी तक के विद्यार्थियों के लिए हिंदी स्टोरी टेलिंग प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। नन्हे-मुन्ने बच्चों ने नैतिक शिक्षाओं, प्रेरक घटनाओं और पौराणिक कथाओं पर आधारित रोचक कहानियां प्रस्तुत कीं। उनकी अभिव्यक्ति, स्पष्ट उच्चारण, अभिनय कौशल और आत्मविश्वास ने सभी दर्शकों को प्रभावित किया। बच्चों ने शेर और चूहा, लालची कुत्ता, प्यासा कौआ, लोमड़ी और कौआ, नन्हा बीज, धन की वृद्धि सहित कई उपविषयों पर सुंदर और शिक्षाप्रद प्रस्तुतियां दीं। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रक्षिता, अविका, राघव, तक्ष, नक्श, परीषा, सहर, बानी, तुष्टि, निष्ठा, मायरा दहिया और पीहू ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान हितांश, वनिका, अन्मय, इनाया, रुत्विक, सम्मिता, जुबेर, इक्शित, खुशबू, कार्तिक, देव, कियांश, आराध्या, पर्व और तक्षय गुप्ता को मिला। तृतीय स्थान उत्सव, दिव्यांश, रिशिता, काश्वी, दृष्टि, भाविक, डॉयल, धैर्य, तनिष्क, नीवी, अव्नी, हान्विका, यशी, आरव, आयुष, मेहर, मनकीरत सिंह, निहारिका और शिक्षित ने प्राप्त किया। विद्यालय प्राचार्या डॉ. ममता मलिक ने बच्चों के उत्साह और रचनात्मकता की सराहना की तथा शिक्षकों व अभिभावकों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विद्यालय निदेशक सुरेंद्र मलिक, उपप्रधानाचार्या मशेंका मौजूद रहे।

आंबेडकर चौक स्थित मॉडल स्कूल में दसवीं कक्षा के अभिभावकों की मीटिंग आयोजित

■ सीबीएसई के लागू की गई दो बोर्ड परीक्षा प्रणाली के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी साझा की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

रोहतक। आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते प्रधानाचार्या डॉ. अरुणा।

आंबेडकर चौक स्थित मॉडल स्कूल में प्रधानाचार्या डॉ. अरुणा तनेजा द्वारा कक्षा दसवीं के अभिभावकों के साथ एक जानकारी परक बैठक आयोजित की गई। बैठक में सीबीएसई द्वारा लागू की गई दो बोर्ड परीक्षा प्रणाली के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी साझा की गई। उन्होंने बताया कि कक्षा दसवीं के सभी विद्यार्थियों के लिए पहली बोर्ड परीक्षा अनिवार्य है तथा इसका परिणाम अप्रैल के अंत तक घोषित किया जाएगा। दूसरी बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थी अधिकतम तीन विषयों में ही परीक्षा दे सकेंगे और भाषाओं में दोबारा अंक-सुधार नहीं कर सकेंगे। यदि कोई छात्र पहली परीक्षा में तीन या अधिक विषयों में अनुपस्थित रहता है, तो उसे "ईआर" श्रेणी में रखा जाएगा और वह दूसरी बोर्ड परीक्षा के लिए पात्र नहीं होगा। दूसरी परीक्षा के लिए प्रैक्टिकल दोबारा आयोजित नहीं होंगे और परिणाम जून अंत तक घोषित होगा। केवल मानक और बुनियादी गणित के बीच परिवर्तन की अनुमति रहेगी, अन्य किसी विषय परिवर्तन या अतिरिक्त विषय जोड़ने की अनुमति नहीं होगी।

एनएसएस स्वयंसेवकों ने निकाली स्वच्छता जागरुकता रैली

महम। आर्य सीनियर सेकेंडरी स्कूल मदीना में सात दिवसीय एनएसएस शिविर लगाया गया है। शिविर के दूसरे दिन स्वयंसेवकों ने स्वच्छता जागरूकता रैली निकाली। इस अभियान में छात्रों ने सड़क के किनारे पड़ी कचरा सामग्री, सूखे पत्ते, प्लास्टिक और अन्य अपशिष्ट को हटाया तथा लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए प्रेरक नारों के माध्यम से संदेश भी दिए । सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मदीना से वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. विवेक एवं डॉ. सोनिया ने विशेषज्ञ वक्ता के रूप में सहभागी होकर विद्यार्थियों को स्वच्छता और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के महत्व के बारे में प्रेरित किया। डॉक्टरों ने छात्रों को दैनिक जीवन में अपनाए जाने वाले स्वच्छता नियम, व्यक्तिगत सफाई, संतुलित खान-पान तथा नियमित स्वास्थ्य जांच के लाभों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि छोटी-छोटी आदतें, जैसे दिन में दो बार दांत साफ करना,

कार्यक्रम बीके सुमन ने पुलिस मुलाजिमों को खुश रहना और दुआएं देना सिखाया

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विव की सिक्योरिटी सर्विस विंग की 25वीं वर्षगांठ पर आयोजन

महम थाने के पुलिस कर्मचारियों ने ओम शांति सेंटर पर किया राजयोग का अभ्यास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महम

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सिक्योरिटी सर्विस विंग की 25वीं वर्षगांठ के मौके पर महम के ओम शांति सेंटर पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विषय था आत्म सुधार से राष्ट्र सशक्तिकरण तक। इस कार्यक्रम में महम थाने के पुलिसकर्मियों ने भाग लिया। इस दौरान पुलिसकर्मियों ने राजयोग का अभ्यास किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता चाणक्य पैलेस दिल्ली से बी.के. जयश्री रही। उन्होंने बताया कि मन को सकारात्मक विचारों से भरपूर करना और हर परिस्थिति में स्वयं को शांत और स्थिर रखना है तो राजयोग ही एक मार्ग है। यह मार्ग हमें परिस्थितियों में डटे रहने का साहस देता है।

महम। आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाग लेते पुलिसकर्मी व साथ मौजूद ब्रह्माकुमारीज बहनें।

ब्रह्मकुमारी बहनों का आभार जताया

अंत में बी.के. जयश्री ने एक्टिविटी के जरिए स्वयं को और सभी को दुआएं देना भी सिखाया एवं राजयोग का महत्व बताया। उनके साथ दिल्ली से पहुंची बी.के. मीनाक्षी ने सभी को कमेंट्री द्वारा राजयोग का अभ्यास कराया। महम थाने के एसएचओ सुभाष समारोह के मुख्य अतिथि रहे। सुभाष ने राजयोग का अभ्यास करवाने के लिए ब्रह्मकुमारी बहनों का आभार जताया। महम सेंटर की इंचार्ज बी के चेतना ने सभी पुलिसकर्मियों को राजयोग का अभ्यास करते रहने के लिए प्रेरित किया। ब्रह्माकुमारी सुमन ने सभी को सदा खुश और पॉजिटिव रहने की प्रेरणा दी। सभी ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का समापन किया।

सुदृढ़ संचार व्यवस्था हो या सामरिक सुरक्षा का मामला, कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी की बात हो या प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान लगाना हो, इन सबके लिए स्पेस टेक्नोलॉजी में नित नई ऊंचाई छूना जरूरी है। इस दिशा में इसरो निरंतर अग्रसर है। यही नहीं विश्व की स्पेस सुपर पावर बनने के लिए भी इसरो के पास कई इंपॉर्टेंट प्रोजेक्ट्स और प्लानिंग्स हैं। इन सभी पर एक विस्तृत नजर।

अंतरिक्ष में नई ऊंचाई छूने के लिए

निरंतर अग्रसर इसरो

कवर स्टोरी

संजय श्रीवास्तव

इसरो द्वारा तीन साल के भीतर अंतरिक्षयान निर्माण की तीन गुनी क्षमता का लक्ष्य निर्धारण, भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षा का पूर्वाभास है। यदि यह हासिल हो जाता है, तो भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी भी न सिर्फ नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के समानांतर खड़ी होगी बल्कि विश्व अंतरिक्ष बाजार में भी वह बहुत बड़ी खिलाड़ी बन जाएगी।

देश की प्रगति के लिए जरूरी: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो का अगले तीन वर्षों में अपने अंतरिक्षयान निर्माण क्षमता को तिगुना करने का फैसला, देश की बदलती सामरिक, वैज्ञानिक और आर्थिक प्राथमिकताओं के पूर्वाभास सरीखा है। इसरो चाहता है कि खुद को अंतरिक्ष के क्षेत्र में भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल सके, ताकि वो निजी कंपनियों की तेज भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा के बीच अविलंब आगे आ सके। उसकी यह पहल, देश को विश्व की अग्रणी अंतरिक्ष शक्तियों की श्रेणी में ऊपरी स्थान दिलाने की दिशा में एक रणनीतिक विस्तार है। अंतरिक्ष यान निर्माण क्षमता को बढ़ाना कई वजहों से जरूरी है। 5जी से बढ़कर 6जी की ओर बढ़ना है, तो सैकड़ों छोटे उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजना ही होगा। पृथ्वी अवलोकन और जलवायु निगरानी उपग्रहों की मांग भविष्य में बहुत ज्यादा बढ़ेगी।

वैश्विक शक्ति बनने की है सामर्थ्य: वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में उपग्रहों और उनकी सेवाओं की मांग अभूतपूर्व तरीके से बढ़ रही है। संचार, अर्थ ऑब्जर्वेशन, रक्षा, निगरानी, नेविगेशन, आपदा प्रबंधन, कृषि और ऊर्जा क्षेत्रों में उपग्रहों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होने के चलते आने वाले दशक में हजारों नए उपग्रह लॉन्च होने की उम्मीद है।

भारत के पास सस्ता, तेज, कुशल और विश्वसनीय अंतरिक्ष अभियान संचालन की बेहतर क्षमता है, इसको पूरी दुनिया जान और मान रही है। तमाम देश इसके लिए भारत की ओर आकर्षित भी हैं। लेकिन अंतरिक्ष यान निर्माण-क्षमता के सीमित होने के कारण देश बेहतरीन कौशल होने के बावजूद इस तेजी से बढ़ती वैश्विक मांग का पूरा लाभ नहीं उठा पा रहा। इसरो अभी सालाना औसतन 6 से 7 अंतरिक्षयान बनाता है। तीन साल बाद क्षमता तीन गुना होने का मतलब है कि वह 18 से 21 अंतरिक्षयान प्रति वर्ष तैयार कर सकेगा। फिर उसके पास अन्य देशों के उपग्रहों के लांच के लिए न सिर्फ पर्याप्त यान होंगे बल्कि उन्हें लांच के लिए विंडो भी। कम समय अंतराल पर होने और निर्माण तथा लांच सुविधाएं सीमितता के चलते इसरो के कई प्रक्षेपण कार्यक्रम आपस में ओवरलैप करते हैं। इसरो द्वारा उत्पादन वृद्धि के साथ सैटेलाइट इंटीग्रेशन सेंटर्स की संख्या बढ़ाना इस ओवरलैप को कम करेगा। अंतरिक्षयानों की संख्या में वृद्धि भारत को वैश्विक प्रक्षेपण सेवाओं के बड़े बाजार में मजबूत प्रतिस्पर्धी बनाएगा, जहां आज अमेरिका की स्पेस-एक्स जैसी निजी कंपनियां लगभग एकछत्र राज कर रही हैं।

संभावनाएं-क्षमताएं हैं भरपूर: आज भारत, वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में केवल 2 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है, इसरो इसे 2030 तक 8 फीसद तक ले जाने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। क्षमता विस्तार, निजी साझेदारी और नई तकनीकों का विकास इसे संभव बना सकता है। बेशक इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी दर्ज होगी तथा संबंधित क्षेत्र में साख भी बढ़ेगी। असल में इसरो की रणनीति महज अपने अंतरिक्ष यानों की संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं है। इस दौर में जब देश में कई स्पेस स्टार्टअप तेजी से उभर रहे हैं, इसरों की प्लानिंग है कि अंतरिक्षयान निर्माण में तमाम बड़ी निजी कंपनियों जैसे लार्सन एंड टुब्रो, गोदरेज, एचएएल, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, स्काईरूट, अग्निकुल, ध्रुव स्पेस तथा अन्य छोटे स्टार्टअप्स को भी वह इस काम में बड़े पैमाने पर साझेदार बनाए ताकि इससे भारत में 'एयरोस्पेस मैन्युफेक्चरिंग इंडस्ट्री' का विकास तीव्र हो। वह अमेरिका में नासा और स्पेस-एक्स जैसे सरकारी एजेंसी और निजी कंपनी के आपसी सहयोग जैसे मॉडल को भारतीय परिस्थितियों में संभव बनाना चाहती है। इससे देश, संबंधित कंपनियों और आखिरकार इसरो को लाभ पहुंचेगा।

निजी क्षेत्रों को कर रहा प्रोत्साहित: जल्द ही भारत का पहला पूर्णतः स्वदेशी उद्योग-निर्मित पीएसएलवी इसी परिवर्तन की ज्वलंत निशानी बनेगा। इसरो खूब जानता है कि निजी क्षेत्र जितना बड़ा होगा, उसको उतनी ही सुविधा होगी। वह उन पर बहुत से तकनीकी और निर्माण कार्यों की जिम्मेदारी देकर अपना ध्यान ज्यादा से ज्यादा प्रक्षेपण कार्यक्रमों एवं अनुसंधान मिशनों पर केंद्रित कर पाएगा। इसरो को निजी-सरकारी कंपनियों के सहयोग से तीन गुनी यान निर्माण क्षमता हासिल हो गई, तो उसका परोक्ष प्रभाव यह भी होगा कि इसरो के वैज्ञानिक मिशन तेजी से पूरे होंगे, वाणिज्यिक लॉन्च बढ़ेंगे। ऐसे में भारत वैश्विक उपग्रह-निर्माण और प्रक्षेपण बाजार में बेहद कमाऊ और प्रभावी खिलाड़ी बन सकेगा। इनके अलावा इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और ज्यादा बढ़ेगी, तो विदेशी कंपनियों पर निर्भरता कम होती जाएगी। बड़ी बात यह भी कि पांच मॉड्यूल वाला देश का अंतरिक्ष स्टेशन समय पर स्थापित करने की संभावना भी इससे मजबूत होगी।

कई स्तरों पर करनी होगी पहल: इसरो के सभी प्रोजेक्ट्स समय से पूरे हों, इस लिए भी इसरो को अपनी यान निर्माण क्षमता को तीन गुना बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। चंद्रयान-4 भारत के लिए अमेरिका के अपोलो कार्यक्रम की तरह विशिष्ट होगा। यह चंद्रमा से नमूने वापस लाकर भारत को उस सैंपल रिटर्न टेक्नोलॉजी में सक्षम बनाएगा, जो संसार के महज तीन देशों के पास है। इसी तरह जापान की अंतरिक्ष एजेंसी जाक्सा के साथ लूपेक्स मिशन, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ की मौजूदगी तलाश उसकी उपयोगिता समझने का अवसर देगा। यह भविष्य के मानव मिशनों के लिए ईंधन और पानी का स्रोत समझाएगा। भारत अपने अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल को 2028 तक पूरा करते हुए 2035 तक पांच मॉड्यूल वाला अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना चाहता है। इस पूरे प्रकरण में सरकार की जो भूमिका हो सकती है, वह यह है कि उसके द्वारा अंतरिक्ष नीति और विनियमों को सरल बनाया जाए ताकि निजी निवेश, इसरो को लंबी अवधि की फंडिंग और स्टार्टअप ईकोसिस्टम को बढ़ावा मिले, मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम पर नियमित निवेश एवं निजी भागीदारी को गति मिले, जिससे इसरो अधिक प्रक्षेपण केंद्र और ट्रैकिंग स्टेशन स्थापित कर सके। अंतरराष्ट्रीय सहयोग के विस्तार पर भी सरकार को जोर देना होगा। फिलहाल इसरो का फैसला देश को वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में आर्थिक शक्ति बनाएगा, लाखों नौकरियों का सृजन, युवा वैज्ञानिकों के लिए अवसर पैदा करेगा। *

कई प्रोजेक्ट्स पर हो रहा काम

इसरो के लिए आने वाला दशक निर्णायक है। इस वर्ष और अगले वर्ष में इसरो के पास आधे दर्जन से अधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम शेष हैं और अगले कुछ वर्षों में संचालित होने वाले इसरो के पूर्व नियत कई प्रमुख अभियान तो बहुत जटिल और महत्वाकांक्षी हैं। गगनयान के कई मानव-रहित परीक्षण, मानव सहित गगनयान, 2028 में जाने वाला चंद्रयान-4, जापानी अंतरिक्ष एजेंसी के साथ मिशन लूपेक्स, एसएसएलवी निर्माण तथा रि-यूजेबल लॉन्च व्हीकल का विकास, शुक्रयान और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन, नई पीढ़ी के संचार उपग्रह जैसे कई महत्त्वाकांक्षी मिशन पर कार्य जारी है।

डिजिटल गेम्स वर्तमान है शानदार-उज्ज्वल है भविष्य

हाल के वर्षों में मनोरंजन के लिहाज से डिजिटल गेम्स का क्रेज जबर्दस्त तरीके से बढ़ा है, निरंतर इसमें इजाफा भी हो रहा है। खासतौर पर इसे लेकर नई पीढ़ी में बहुत दीवानगी देखी जाती है। इसकी क्या हैं वजहें और कैसा है भविष्य, जानिए।

टेक्नोलाइफ

लोकमित्र गौतम

आज के युग में मनोरंजन, शिक्षा और तकनीकी प्रयोग का सबसे लोकप्रिय माध्यम बन चुके हैं-डिजिटल गेम्स। मोबाइल, कंप्यूटर, टैबलेट और गेमिंग कंसोल के जरिए खेले जाने वाले ये खेल महज खेल नहीं हैं बल्कि आज की तारीख में अरबों रुपए का कारोबार भी है। नई पीढ़ी के बीच इन डिजिटल गेम्स का आकर्षण इतना अधिक है कि अब ये डिजिटल गेम्स एक पूरी संस्कृति का रूप ले चुके हैं।

क्या होते हैं डिजिटल गेम्स: डिजिटल गेम्स सही मायने में इलेक्ट्रॉनिक खेल होते हैं। इन्हें डिजिटल गेम इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ये किसी डिजिटल डिवाइस के जरिए खेले जाते हैं। जैसे- कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन, टैबलेट या वीडियो गेम कंसोल। डिजिटल गेम्स में ग्राफिक, ध्वनि और उपयोगकर्ता का सीधे-सीधे संपर्क या इंट्रैक्शन संभव है। यह इंट्रैक्शन या संपर्क दो तरीके से होता है। इसमें एक है वर्चुअल अनुभव। वास्तव में यह किसी अनुभव के आधार पर तैयार किए जाते हैं और यहीं इनकी भूमिका बदल जाती है। यह केवल शारीरिक सक्रियता या महज मनोरंजन का कारण नहीं होते बल्कि कभी-कभी सीखने, कभी रणनीति बनाने, कभी निर्णय क्षमता को परखने या उसे विकसित करने तथा कभी-कभी हीनभावना को दूर करने का तरीका भी होते हैं।

दीवानी है नई पीढ़ी: नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स को लेकर बहुत ज्यादा आकर्षण या कहें क्रेज है। विशेषकर जनरेशन जेड और अल्फा, डिजिटल दुनिया में जन्मी, पली-बढ़ी पीढ़ियां इन खेलों की दीवानी हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि इनका बचपन मोबाइल और इंटरनेट के साथ खेलते और इस्तेमाल करते हुए गुजरा। इसलिए डिजिटल गेम्स को ये मनोरंजन नहीं कहते बल्कि अपने व्यक्तित्व की पहचान, प्रतिस्पर्धा और आत्म अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं।

इसलिए बढ़ रहा इतना क्रेज: नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स का इतना क्रेज इसलिए है, क्योंकि यह वास्तविक अनुभव देता है। आज के डिजिटल गेम्स में एक साथ वीआर यानी वर्चुअल रियलिटी और एआर यानी ऑग्मेंटेड रियलिटी का इस्तेमाल होता है, जिसे खिलाड़ी इन्हें दूर से खेलता हुआ नहीं लगता बल्कि खुद को वह खेल के भीतर का हिस्सा समझता है और खेल के रोमांच को पल-पल महसूस करता है। दुनिया के किसी कोने से किसी दोस्त के साथ, किसी अजनबी के साथ, इन खेलों को खेला जा सकता है यानी आज की डिजिटल लाइफ के अनुकूल ये ऑनलाइन गेम की सुविधा प्रदान करते हैं और सबसे आकर्षक बात यह है कि डिजिटल गेम्स, एक रिवॉर्ड सिस्टम से भी जुड़ा होता है यानी प्वाइंट, लेवल और खरीदारी के लिए वाउचर जैसी सुविधाओं का मौजूद होना खिलाड़ियों को अलग ही दुनिया के रोमांच से जोड़ देते हैं। आज की तारीख में डिजिटल गेम्स महज खेलने की डिजिटल गतिविधि भर नहीं हैं बल्कि यह एक किस्म की सामाजिक प्रतिष्ठा बन चुके हैं। युवाओं में गेमिंग अब अपने आपमें एक स्टेटस सिंबल बन चुका है। लोकप्रिय गेम्स में बेहतर प्रदर्शन करने वालों को सोशल मीडिया पर फॉलोअर्स और फैंस भी मिलते हैं। इस तरह डिजिटल गेम्स मनोरंजन करने के साथ-साथ हमारे तनाव मुक्ति का भी जरिया हैं। इस कारण भी युवाओं में डिजिटल गेम्स को लेकर जबरदस्त क्रेज है।

ऐसे हुई डिजिटल गेम्स की शुरुआत: वर्ष 1962 की बात है, एमआईटी यानी मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, अमेरिका में दो युवाओं ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम स्पेस वार बनाया। स्टीव रसेल और उनके दोस्त मार्टिन ग्रेट्ज ने पहले-पहल इस डिजिटल गेम्स की अवधारणा को 1961 में रखा था। लेकिन बाद के एक साल में उनके साथ उनके चार और दोस्त आ जुड़े, ये थे- वेन विटानन, पीटर सैमसन, डेन एडवर्ड्स और एलन कोटाक। इन सभी ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम्स स्पेस वार सीडीपी-1 कंप्यूटर पर बनाया। यहीं से आधुनिक वीडियो गेम उद्योग की शुरूआत हुई।

जहां तक भारत में डिजिटल गेमिंग की शुरुआत का सवाल है तो यह सन 1990 के दशक में आया, जब कंप्यूटर और इंटरनेट भी धीरे-धीरे आम लोगों तक पहुंचने लगे थे। भारत का पहला स्वदेशी डिजिटल गेम 'भारतः द गेम' (1998) माना जाता है, जिसे सिनका गेम्स कंपनी ने विकसित किया था। हालांकि गेम बहुत अधिक लोकप्रिय नहीं हुआ।

डिजिटल गेम्स का भविष्य: जहां तक डिजिटल गेम्स की दुनिया के भविष्य का सवाल है तो यह बेहद उज्ज्वल और तकनीकी रूप से बेहद रोमांचक है। साल 2025 में वैश्विक गेमिंग इंडस्ट्री बढ़कर 250 अरब अमेरिकी डॉलर की हो चुकी है और इसमें बहुत बड़ा हिस्सा भारत के डिजिटल गेम्स प्रेमियों का भी है। क्योंकि साल 2024 के अंत तक भारत में सक्रिय गेम्स की संख्या बढ़कर 40 करोड़ हो चुकी है। शायद यह डिजिटल गेमिंग का ही विस्तार है कि आज ई-स्पोर्ट्स की दुनिया बड़े पैमाने पर उभरी है और लाखों लोग इसे अपना करियर बनाकर अपना भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित कर रहे हैं। *

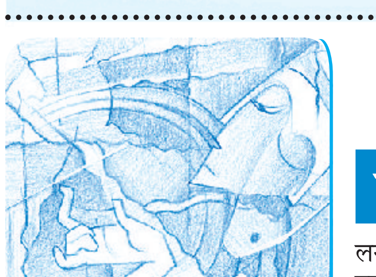

कविता

पुरुषोत्तम व्यास

गिरना भी अच्छा होता

कभी-कभी गिरना भी अच्छा होता,
गिरने से संभलना सीखते
फिर चलना सीखते।
समझ में आता है
अति हर चीज की
अच्छी होती नहीं,
बात-बात पर अहंकारी,
और ज्यादा ज्ञानी
समझने से बच जाते।
बात यह भी जरूरी है कि
गिरने को किस रूप में देखते हो,
विचलित होते हो या
नए साहस से आगे बढ़ते हो
गिरने से दिमाग भी
ठिकाने रहता
अपने और पराए पर
पर्दा उठ जाता।
अगर गिरे तो फिर
नए रूप लेकर उठो
नए विचार लेकर उठो
बेफिक्र होकर जीना सीखो
इसलिए कभी-कभी
गिरना भी अच्छा होता है।

व्यंग्यात्मक संस्मरण

डॉ. मुकेश असीमित

टिकट विंडो की लाइन

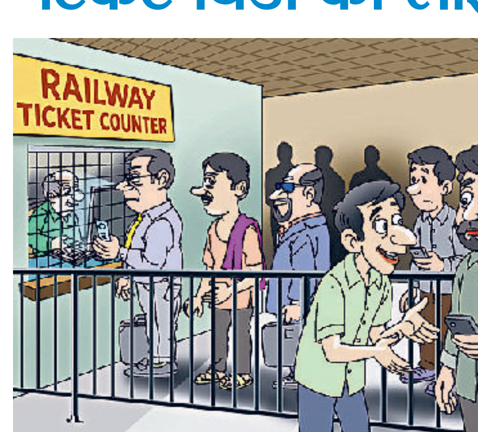

रेलवे स्टेशन की टिकट विंडो आजकल किसी आध्यात्मिक तप जैसी लगती है। अमृत योजना का थोड़ा-बहुत बजट खर्च कर चार खिड़कियां बना दी गई हैं, पर चारों के सामने उतनी ही लंबी लाइनें, मानो चार अलग-अलग धर्मपंथ हों और भक्त सभी जगह समान संख्या में हों।

मैं बड़ी होशियारी से सबसे छोटी लाइन में लगा, और जैसे ही लगा किस्मत मेरी गर्दन पकड़कर मुझ पर हंस रही हो जैसे। मेरी लाइन कछुए की चाल से और बाजू वाली लाइन खरगोश की गति से फुर्र-फुर्र बढ़ती जा रही थी।

खिड़की पर एक बुजुर्ग बाबू थे, शायद रिटायरमेंट के ठीक पहले के अंतिम वर्ष में। चश्मा उतारते, लगाते, की-बोर्ड को किसी वेद-पाठ की तरह एक-एक अक्षर छूते। स्क्रीन पर अक्षर प्रकट होता तो उनके चेहरे की झुर्रियां भी खिल उठतीं, मानो तकनीकी उन्नयन का चमत्कार उन्हें रोज नई जवानी दे रहा हो। रेलवे ने शायद फैसला कर रखा है कि यह महाशय अपना अंतिम प्रण और अंतिम प्रणय दोनों इसी खिड़की पर छोड़ेंगे।

इतने में एक दुबला-पतला अधेड़ मेरी कोहनी पसलियों में गड़ाता हुआ फुसफुसाया, 'कौनसी ट्रेन चाहिए साहब? बोलो तो जुगाड़ कर दूं, अंदर तक पहुंच है। बस सौ का एक नोट एक्स्ट्रा।'

मैंने विनम्रता से मना कर दिया। विनम्रता पर उसने जर्दे-भीगे होंठों से मोबाइल और मुझे संयुक्त रूप से एक गाली दी और फुर्र हो गया। उसकी प्रतिक्रिया खीझ से उत्पन्न हुई, जैसे कोई एक डील होते-होते रह गई हो।

मोबाइल ही आजकल इन लंबी लाइनों का आधुनिक तपो-साधन है, सभी यात्री उसमें गुम। मैं भी व्हाट्सएप की दुनिया में तल्लीन था, तभी आगे शोर हुआ। एक यात्री जिसकी ट्रेन छूटने वाली थी, लाइन तोड़कर हथेली खिड़की के नैनो साइज के छेद में घुसा चुका था कि दूसरा यात्री अपना हाथ निकाल ही नहीं पा रहा था। अब विवाद यह नहीं कि किसकी बारी, बल्कि यह कि सबसे पहले हाथ कौन निकाले!

बाबू ने सीटी बजाई। दो पुलिसकर्मी अपनी तोंदें, बाल्टी की तरह लटकाते हुए आए। लाठी को हवा में घुमाते हुए स्थानीय भाषा में अपशब्दों का ऐसा समन्वित गान किया कि लाइन तुरंत सीधी हो गई। दोनों यात्रियों के हाथ बड़ी मुश्किल से निकाले गए। इस खींचतान में एक की हस्त-धारित भारतीय मुद्रा फट गई और उसके मुंह से निकली गालियां व्यवस्था की संपूर्ण संस्थाओं को समर्पित थीं, रेलवे, सरकार, मंत्री से लेकर कुली तक कोई नहीं छूटा।

मैं फिर मोबाइल में चला गया। नया वर्ष आने में महीना है लेकिन कंपनियां जैसे चाहती हैं कि इस बार मैं चार नए कपड़ों, दो नई चॉकलेटों और पांच नए कूपनों से लैस रहूं। ऑफर ऐसे कि लगता है हर कंपनी ने मेरे लिए ही सुकुमारी ब्रांड की मॉडल को विज्ञापन में खड़ा किया है। एक बार जल्दबाजी में मैंने सुकुमारी के मोहपाश में बंधे सब्सक्रिप्शन डाल दिया था, तभी से वह मेरे जीवन की स्थाई सदस्य बन चुकी है।

मोबाइल भी क्या करे। कंपनियां चाहती हैं कि आप दिन-रात उसी से चिपके रहो। कभी धमाका सेल, कभी फ्लैश सेल, कभी लास्ट स्टॉक, हड़प लो!

नई पीढ़ी को ये सेल-ऑफर ऐसे जकड़ती है कि किसी उल्टे-सीधे काम में ऊर्जा लगे, उससे अच्छा है कि स्क्रीन पर अंगूठा फिसलाते रहो। गेम्स, जुआ, सट्टा, लॉटरी सब आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है।

इधर मेरा मोबाइल भी मेरा पूरा जीवन समझता है- कब रिचार्ज खत्म होगा? कब बीमा एक्सपायर होगा? कब कार की सर्विसिंग करानी है?

कब पुरानी कार बेचे चार साल हो गए? यह सब याद दिला रहा है।

सच कहूं तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता।

मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियां भी तड़ातड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूं, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई।

शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज भी। *

लघुकथा / सतीश उपाध्याय

दरवाजा

मम्मी, दादाजी की वजह से हमारी पढ़ाई डिस्टर्ब होती है, बार-बार हमारे कमरे में आ जाते हैं।' परेश ने अपनी मां से दादाजी की शिकायत की। सामने कुर्सी पर बैठे दादाजी अखबार पढ़ रहे थे, वह तुरंत बोले, 'नहीं बेटा, ऐसी बात नहीं है। तुमको मैंने तीन घंटे से नहीं देखा था, इसलिए ऐसे ही तुम्हें देखने तुम्हारे कमरे में चला आया था।' परेश की मम्मी बेटे का पक्ष लेते हुए बोलीं, 'बाबूजी, थोड़ा बुद्धि से काम लिया करिए। स्कूल से कितना होमवर्क मिलता है, असाइनमेंट पूरा करना होता है। अगर वह आपसे बात करेगा तो उसका होमवर्क कैसे पूरा हो पाएगा?' दादाजी आहिस्ता से बोले, 'बेटा बात सही है, अब मैं आगे से ध्यान रखूंगा।' अगला दिन छुट्टी का था। परेश सारा दिन अपने लैपटॉप और मोबाइल में ही बिजी था। दादाजी के भीतर अपने पोते के प्रति प्यार उमड़ा तो वह अपने आपको रोक नहीं पाए। परेश के कमरे में चले गए। परेश के बेड पर स्कूल की कॉपी-किताबें बिखरी हुई थीं। वह मोबाइल में बिजी था। उसने दादाजी की आहट सुनी, लेकिन वह दादाजी की उपेक्षा करते हुए अपने मोबाइल में ही लगा रहा। दादाजी ने पूछा, 'क्या कर रहे हो बेटा?' परेश रूखे स्वर में बोला, 'दादाजी देख नहीं रहे हैं, मैं अपना असाइनमेंट पूरा कर रहा हूं। आप डिस्टर्ब मत करिए।' 'ठीक है बेटा, कितना समय लगेगा, इसे पूरा करने में?' दादाजी ने बड़े प्यार से पूछा। 'दादाजी मैं अभी कैसे बता दूं, आप डिस्टर्ब मत कीजिए प्लीज।' परेश ने तेज स्वर में बोला। 'ठीक है बेटा, मैं नीचे तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।' यह कहकर दादाजी ने कमरे से बाहर निकलते समय पलटकर देखा, परेश अपने मोबाइल में लगा दिखा। दादाजी के कमरे से निकलते ही परेश ने अपने कमरे का दरवाजा तेज आवाज के साथ बंद कर दिया। दादाजी कुछ देर दरवाजे के पास भाव शून्य खड़े रहे। उनकी आंखों में एक नमी उतर आई थी। *

पुस्तकः छवि से अलग (संस्मरण), **लेखकः** विनोद दास, **मूल्यः** 295 रुपए, **प्रकाशकः** सेतु प्रकाशन, नोएडा

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

छवि से अलग

हाल में ही वरिष्ठ साहित्यकार विनोद दास के संस्मरणों की पुस्तक 'छवि से अलग' छपकर आई है। इसमें चौदह नामचीन साहित्यकारों के साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से जुड़ा संस्मरण भी संकलित है। इन संस्मरणों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें सम्मिलित हस्तियों की कई अनावृत्त रही छवियां उजागर होती हैं। ये छवियां उनके साहित्यिक ही नहीं व्यक्तिगत जीवन से भी जुड़ी हुई हैं। लेखक ने निरपेक्ष भाव से इनकी खूबियों और खामियों को सामने रखा है। इसके साथ ही साथ कई संस्मरणों में लेखक, समानांतर रूप से उस देश, काल और परिस्थितियों का भी वर्णन करते चलते हैं, जब इन अनुभूतियों को वे अर्जित कर रहे थे। निर्मल वर्मा, नामवर सिंह, श्रीलाल शुक्ला, कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह, अखिलेश, शानी और मुद्राराक्षस जैसे कई साहित्यकारों के बारे में यह किताब बहुत कुछ अनसुना बताती है। *

अगर आपको गांव की खूबसूरती, वहां का प्राकृतिक वातावरण लुभाता है, साथ ही पक्षी प्रेमी भी हैं तो आपको इस मौसम में 'भारत का पक्षी गांव' के नाम से प्रसिद्ध मेनार गांव जरूर जाना चाहिए। किस तरह से मेनार गांव, पक्षी-प्रकृति संरक्षण की मिसाल बन गया है, वहां से लौटकर बता रहे हैं लेखक अपनी जुबानी।

पक्षी संरक्षण की मिसाल मेनार गांव

पर्यटन स्थल

समीर चौधरी

हाल ही में मैं उदयपुर घूमने गया था। जब मुझे स्थानीय लोगों से पक्षी संरक्षण के लिए मशहूर मेनार गांव के बारे में पता चला तो खुद को रोक नहीं पाया। राजस्थान के खूबसूरत शहर उदयपुर के नजदीक स्थित मेनार गांव में मैं बिना किसी असुविधा के बिल्कुल सुबह पहुंच गया था। सुबह होते ही मेनार में चिड़ियों का चहचहाना हर ओर से सुनाई पड़ने लगता है। खासतौर पर मानसून के बाद सर्दी के मौसम की शुरुआत होने पर यह नजारा बहुत मनभावन लगता है, जब दूर देशों से बड़ी संख्या में पक्षी जाड़ों के अपने इस आवास में लौटने लगते हैं। दशकों से मेनार 100 से अधिक स्थानीय और ठंडे इलाकों से पलायन करके आने वाले पक्षियों का अभयारण्य बना हुआ है। यहां आने वाले प्रमुख पक्षियों में फ्लेमिंगो,

पेलिकन, कूटस और लुप्त होने की कगार पर पहुंच चुका सारस क्रेन भी शामिल हैं। इन्हें देखने के लिए दूर-दूर से पक्षी प्रेमी यहां आते हैं।

ग्रामीणों की भूमिका महत्वपूर्ण: मेनार गांव की विशेषता केवल इसकी जैव-विविधता ही नहीं है बल्कि यहां के लोग भी हैं, जिनकी वजह से पक्षी संरक्षण संभव हो सका है। मेनार के लोगों का यहां आने वाले मेहमान पक्षियों से लगाव का सिलसिला लगभग दो शताब्दी पहले आरंभ हुआ था। मुझे स्थानीय लोगों ने ही बताया कि वर्ष 1832 में यहां की एक झील के किनारे किसी ब्रिटिश अधिकारी ने एक पक्षी को गोली मार दी थी। उससे नाराज ग्रामीणों ने तुरंत ही उस ब्रिटिश व्यक्ति को गांव से बाहर जाने पर मजबूर कर दिया। यह कहानी लोककथा बन गई और इसी ने मेनार के पक्षी प्रेम और संरक्षण की आधारशिला रखी। समय के साथ मेनार के लोगों ने अपने तालाबों (ब्रह्म तालाब, धंड तालाब और खेरोड़ा तालाब) को जीवंत वेटलैंड्स में बदल दिया। इनके प्रयास रंग लाए। मेनार को आधिकारिक तौर पर राजस्थान के पहले पक्षी गांव के रूप में मान्यता मिल गई और उसे रामसर साइट (अंतरराष्ट्रीय महत्व का वेट लैंड, जो जीव संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है) घोषित किया गया। मेनार को वर्ष 2023 में भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों में भी शामिल किया गया।

जागरूक हैं स्थानीय निवासी: मेनार में पक्षियों को देखते हुए मेरी मुलाकात स्थानीय निवासी दर्शन मेनारिया से हुई, जो पक्षी-मित्र कहे जाते हैं। अपनी इस पहचान पर उन्हें गर्व है। हालांकि वह एक विद्यालय में अध्यापक

भी हैं। दर्शन कितना भी व्यस्त रहें, अगर उन्हें किसी पक्षी के चहचहाने की आवाज सुनाई पड़ती है तो वह पक्षियों के गीत सुनने में मगन हो जाते हैं। वे अपने छात्रों से भी कहते हैं कि पक्षियों के गीत को सुनो। जब छात्र पक्षी को देखेंगे और पहचानेंगे, तभी वे वास्तव में उनकी देखभाल करेंगे, उनके संरक्षण में अपना योगदान देंगे।

ऐसे किया जा रहा संरक्षण: मेनार में पक्षी संरक्षण केवल जागरूकता का विषय नहीं, वहां की जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है। यहां धार्मिक रीति-रिवाजों का आयोजन झील के किनारों पर किया जाता है ताकि मानव और प्रकृति का संबंध मजबूत किया जा सके। यहां मछली पकड़ने और गर्मी में की जाने वाली खेती को स्थानीय लोगों ने अपनी इच्छा से बंद कर दिया है ताकि पक्षियों के ठहरने की जगहों को सुरक्षित रखा जा सके। झीलों से पानी भी बहुत कम निकाला जाता है। ग्रामीण अपनी जरूरतों के साथ पक्षियों की जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखते हैं।

सरकारी प्रयासों की बात करें, तो राजस्थान वन विभाग द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त पक्षी-मित्र हाथ में बाइनोक्यूलर्स (दूरबीन) लेकर सुबह-शाम को झीलों की निगरानी करते हैं। वे यहां आने वाले पक्षियों की गतिविधियों, पलायन पैटर्न को ऑब्जर्व करते हैं और खतरे की स्थिति में सावधान करते हैं। इस स्थानीय निगरानी ने न केवल सामान्य जलमुर्गियों को सुरक्षित रखने में मदद की है बल्कि उन प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिन पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।

बन चुकी है डॉक्यूमेंट्री फिल्म: फिल्म मेकर गुंजन मेनन ने मेनार की कहानी को अपनी अवॉर्ड-विनिंग डॉक्यूमेंट्री 'विंग्स ऑफ होप' (उम्मीदों के पर) में भी प्रस्तुत किया है। वह इसे 'विश्वसनीय नेतृत्व की कहानी' कहती हैं। इस फिल्म में उन्होंने बताया कि जमीनी प्रयासों से वह हासिल किया जा सकता है, जो अकसर बड़े पैमाने की नीतियों या बड़े बजट से नहीं मिलता।

बहरहाल, मेनार गांव देश ही नहीं, दुनिया भर के पक्षी प्रेमियों के लिए मिसाल बन गया है। *

जब करें घने कोहरे में ड्राइविंग
रखें इन बातों का खास ध्यान

सर्दी के मौसम में जब घना कोहरा छाया हो, तो विजिबिलिटी बहुत कम हो जाती है। ऐसे में ड्राइविंग बेहद चुनौतीपूर्ण हो जाता है। थोड़ी सावधानी और कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखकर आप धुंध वाले मौसम में भी सेफ ड्राइव कर सकते हैं।

सजगता

विवेक कुमार

हालांकि अभी बहुत अधिक ठंड नहीं हो रही है लेकिन आने वाले दिनों में इसमें इजाफा होगा। हाड़ कंपा देने वाली भीषण ठंड और घने कोहरे में वाहन चलाना बहुत चुनौती भरा काम होता है। देर रात में या पौ फटने से पहले सुबह के समय कोहरे के कारण जब विजिबिलिटी का स्तर कम हो जाता है, तब ड्राइविंग करना और मुश्किल होता है। ऐसे में अगर आपके लिए कहीं जाना बेहद जरूरी है और आप अपने वाहन से जा रहे हैं, तो घने कोहरे में सुरक्षित सफर के लिए कुछ बातों का ध्यान रखें।

ड्राइविंग पर फोकस्ड रहें: ड्राइविंग करते समय मोबाइल फोन पर किसी से बात करना, बगल में या पीछे सीट पर बैठे व्यक्ति के साथ लगातार बात करना, म्यूजिक सुनना, इन

तमाम कामों से आपका फोकस ड्राइविंग से हट सकता है। घने कोहरे में अगर आप ड्राइविंग कर रहे हैं तो आपका ध्यान पूरी तरह ड्राइविंग पर ही केंद्रित रहना चाहिए। सामान्य दिनों में भी इस तरह की सावधानी बरतनी चाहिए।

स्पीड कम रखें: कोहरे में गाड़ी बहुत धीमी गति में चलानी चाहिए। इससे दुर्घटना होने की आशंका तो कम होती ही है, किसी भी तरह की दुर्घटना होने पर नुकसान ज्यादा नहीं होता है। अपने आगे चलने वाले वाहन के बीच पर्याप्त गैप रखते हुए धीरे-धीरे ड्राइव करें। इससे आपको अचानक ब्रेक लगाने या गति बदलने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। कोहरे में गाड़ी ड्राइव करते समय अचानक अपनी लेन बदलने से भी बचें, क्योंकि विजिबिलिटी कम होने के कारण आपकी गाड़ी की गति और दिशा का अनुमान पीछे से आने वाले दूसरे वाहन का चालक नहीं लगा पाता है, इससे एक्सीडेंट की संभावना होती है।

सावधानी से गाड़ी मोड़ें: अगर आपको किसी मोड़ पर अपनी गाड़ी मोड़नी है तो अपनी गाड़ी की गति पहले से ही धीमी कर लें, क्योंकि कोहरे में बिल्कुल करीब की भी चीज दिखाई नहीं देती है। ऐसे में अगर गाड़ी मोड़ते समय गति तेज हुई तो दुर्घटना होने का डर रहता है। धुंध में ओवरटेकिंग करना बहुत खतरनाक हो सकता है, क्योंकि विजिबिलिटी बहुत कम होने से यह नहीं दिख पाता है कि आगे कोई वाहन है या नहीं और उसकी स्पीड कितनी है? इसलिए कोहरे में यथासंभव गाड़ी धीमे चलाएं और ओवर टेकिंग करने से बचें।

वाहन को रोक दें: यदि विजिबिलिटी बहुत ही कम हो, तो सड़क के किनारे सुरक्षित जगह पर गाड़ी को रोक कर थोड़ा कोहरा छंटने का इंतजार करना चाहिए। अपनी गाड़ी को जब सड़क पर किनारे खड़ा करें तो कार की हैजार्ड लाइट चालू रखें ताकि सड़क पर चलने वाले दूसरे वाहन आपकी कार को देख सकें और सुरक्षित तरीके से बगल से निकल जाएं।

विंडोज-विंड स्क्रीन को साफ रखें: घने कोहरे और ओस की बूंदों के कारण विंडोज और विंड स्क्रीन पर लगा सीसा बार-बार धुंधला हो जाता है। ऐसे में विजिबिलिटी और भी कम हो जाती है। इससे बचने के लिए बीच-बीच में वाइपर चलाते रहें। कार के हीटर ऑन कर वाहन के अंदर से ही इन

पर जमने वाली भाप को कम किया जा सकता है। अधिक दिक्कत होने पर गाड़ी से उतर कर साफ कपड़े से इन्हें साफ करना चाहिए।

रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाएं: अपनी कार के पीछे लाल रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाने से आपके पीछे चलने वाले वाहन को आपके वाहन की स्थिति पता चलती रहती है। इससे दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है और दुर्घटना की आशंका से भी बचा जा सकता है। *

नदी गाथा

वीना गौतम

वैसे तो जम्मू-कश्मीर में कई मनोहारी झीलें और नदियां हैं। इन्हीं में से एक तवी नदी न केवल अपने प्रवाह सौंदर्य के लिए, अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक महत्ता और अपनी गोद में समेटे जैव विविधता के लिए भी जानी जाती है।

महज जलधारा ही नहीं जम्मू की सांस्कृतिक आत्मा है तवी नदी

नदियां जीवनदायिनी होती हैं। नदियों के किनारे ही दुनिया की सभी सभ्यताएं और संस्कृतियां फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति आम लोगों की उदासीनता के चलते धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसलिए नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ियों को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती पर इंसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फलती-फूलती रहे। ऐसी ही एक महत्वपूर्ण और सुंदर नदी तवी, जम्मू शहर से होकर प्रवाहित होती है। जैसे किसी जीवंत शरीर में हृदय धड़कता है, वैसे ही जम्मू के लिए तवी की निरंतर बहती धारा है। यह नदी महज पानी की धार नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भावनात्मक पहचान का आधार स्तंभ है। स्थानीय डोगरा समाज में तवी को सूर्य पुत्री कहा जाता है यानी, एक ऐसी बेटी, जिसे सूर्य देव से जीवन मिला हो। यही उसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व का आधार माना जाता है।

नदी का उद्भव और प्रवाह: तवी नदी शिवालिक पर्वतों की गोद से जन्मती है। सुधमाह महादेव के निकट डोडा जिले के कैलाश कुंड ग्लेशियर से इसका उद्गम माना जाता है। 4,220 मीटर की ऊंचाई से उतरकर यह नदी 141 किलोमीटर का सफर तय करके अखनूर के पास चिनाब नदी में मिल जाती है। अपने प्रवाह में यह पहाड़ी पत्थरों, झाड़ियों, घास के मैदानों और घाटियों को चीरते हुए आगे बढ़ती है। तवी नदी का प्रवाह इसे एक युवा नदी के रूप में दर्शाता है। क्योंकि इसका प्रवाह तेज, पथरीला और जल स्वच्छ होता है। गर्मियों में चूंकि हिमालय में बर्फ पिघलती है, इसलिए गर्मी के मौसम में इसमें पानी बढ़ जाता है, जबकि सर्दियों में नदी शांत और सक्रिय हो जाती है। इन दोनों मौसमों के विपरीत मानसून के आते ही तवी का शक्तिशाली और प्रचंड रूप देखने को मिलता है।

तवी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू का मनोरम दृश्य

पौराणिक-धार्मिक महत्ता भी है बहुत: तवी का स्थान केवल भूगोल में ही महत्वपूर्ण नहीं है, पौराणिक आख्यानों और लोक-साहित्य में भी यह रची बसी है। सूर्य पुत्री कही जाने वाली तवी की मान्यता, डोगरा राजवंश के इतिहास की सांस्कृतिक धुरी मानी जाती है। जम्मू का प्रतिष्ठित बहू-किला इसी नदी के किनारे स्थित है। इसी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू बागीचा, महामाया मंदिर और उसके पास की घाटियां, तवी को सौंदर्य की देवी का दर्जा देती हैं। तवी की वजह से ही ये स्थल इस शहर की आकर्षक धरोहरों में शामिल हैं। प्राचीन मंदिरों, धार्मिक अनुष्ठानों में भी तवी नदी की भूमिका हमेशा रही है। डोगरा राज परिवार के संस्कार, पूजा-तीर्थ, अर्पण और पितृ श्रद्धा इसी नदी के तट पर संपन्न होती है। छठ पर्व, मकर संक्रांति, डोगरा मेलों और विशेष पूजा अर्चनाओं का केंद्र तवी नदी के तट ही होते हैं। शिवरात्रि में यहां विशेष उत्सव संपन्न होता है। डोगरी लोकगीतों में बार-बार तवी नदी का जिक्र आता है। यहां एक उक्ति बहुत प्रचलित है, 'तवी दे पाणियां वर्गे, सच्चे ने जम्मू दे लोग।' यानी तवी के पानी की तरह ही जम्मू के लोगों का मन भी निर्मल है। तवी जम्मू की आत्मा है। इसके रिवर फ्रंट, घाटों और हरित पट्टियों के माध्यम से यह नदी एक सांस्कृतिक स्थल के रूप में पुनर्जीवित हो रही है।

अखनूर फोर्ट के पास से प्रवाहमान तवी नदी

मौजूद है समृद्ध जैव विविधता: सिर्फ संस्कृति ही नहीं जम्मू क्षेत्र के पर्यावरण का भी मूल आधार तवी नदी ही है। इसकी घाटी में समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है। देवदार, चीड़, शीशम, क्राप, पॉपुलर तथा अनेक औषधीय पेड़ इसके किनारे पनपते हैं और इसको समृद्ध वनस्पति स्थल बनाते हैं। इसी तरह तवी घाटी में हिमालयी लंगूर, पहाड़ी लोमड़ी, जंगली बिल्ली और काला भालू जैसे जीव जंतु भी पाए जाते हैं। इनके अलावा यहां किंग फिशर, उल्लू, बगुले, पहाड़ी गौरैया जैसे पक्षी इसकी जैव विविधता की गाथा कहते हैं। इसी में ट्राउट, महाशीर और क्रॉप जैसी मछलियों की भी उपस्थिति इसे खास बनाती है।

कई तरह से है उपयोगी: तवी का तेज प्रवाह इसका पथरीला तल इसे देश की दूसरी नदियों की अपेक्षा बेहद स्वच्छ रखता है। यह चिनाब की प्रमुख सहायक नदी है और सिंध प्रणाली में जल उपलब्धता बढ़ाने पर अपना योगदान देती है। इसके तलों पर उगने वाली घास और वृक्ष, नदी के कटाव को रोकते हैं और जैविक स्थिरता बनाए रखते हैं। शहर के मध्य से गुजरते समय इसका घुमावदार प्रवाह बहुत आकर्षक लगता है। यह जम्मू शहर के पेय जल की प्रमुख स्रोत है। साथ ही इससे जम्मू, उधमपुर और अखनूर जिलों की कृषि भूमि सिंचित होती है।

चुनौतियां हैं कई: हर नदी की तरह तवी के भी कुछ संकट हैं, जैसे शहर का बहने वाला नाला, कचरा और सीवेज इसे बीमार बनाता है। अवैध रेत खनन इसे घायल करता है और शहरीकरण का बढ़ता बोझ इसके विस्तार को छीनता जा रहा है, जो इसके जलस्तर में कमी का प्रमुख कारण बनता है। तवी महज एक नदी नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक धरोहर है। इसे इतिहास की धड़कन और संस्कृति की आत्मा कहते हैं। जम्मू शहर की इस पहचान को संरक्षित किया जाना बहुत आवश्यक है। *

बड़ा पर्दा

हेमंत पाल

श्याम बेनेगल की 'अंकुर' में दिखा जीवन यथार्थ

बिमल रॉय की यथार्थपरक फिल्म 'दो बीघा जमीन'

जीवन-समाज की सच्चाई दिखाता यथार्थपरक समानांतर सिनेमा

फिल्म निर्माण के शुरुआती दिनों से ही फिल्मकारों ने जीवन और सामाजिक यथार्थ को अपनी फिल्मों का विषय बनाना शुरू कर दिया था। हालांकि यह सामाजिक यथार्थ, पैरेलल सिनेमा में देखने को मिलता है। समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने वाले फिल्मकारों और हिंदी सिनेमा में इस ट्रेंड पर एक नजर।

भारतीय सिनेमा में यथार्थवाद की झलक बहुत पुरानी बात है। ऐसी फिल्मों की नींव सन 1920 से 30 के दशक में ही पड़ गई थी, जब 1925 में बाबूराव पेंटर ने अपनी मूक फिल्म 'सावकारी पाश' बनाई, जिसमें वी. शांताराम ने गरीब किसान का किरदार निभाया था। वह किसान अपनी जमीन एक साहूकार को देने के लिए मजबूर हो जाता है और गांव छोड़कर शहर में मिल मजदूर बन जाता है। इसे भारत की पहली समानांतर फिल्म माना जाता है। साल 1937 में महिलाओं की दुर्दशा पर बनी फिल्म 'दुनिया ना माने' को भी समानांतर फिल्म की श्रेणी में ही रखा जाता है। समानांतर सिनेमा यानी पैरेलल सिनेमा को 'आर्ट सिनेमा' या 'नया सिनेमा' के नाम से भी जाना जाता है। माना जाता है कि हमारा समानांतर सिनेमा इटैलियन न्यू रियलिज्म, फ्रांस के फ्रेंच न्यू वेव और जापान के न्यू वेव सिनेमा से प्रभावित रहा है।

समानांतर सिनेमा ने ली नई करवट: शुरुआती 1920-30 के दशक में भले ही समानांतर सिनेमा बनाने के कुछ प्रयोग किए गए, लेकिन तब ये परंपरा कुछ खास आगे नहीं बढ़ सकी। सन 1940 से 1960 के दशक में समानांतर सिनेमा ने फिर से करवट ली। इस दौर में सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल राय, मृणाल सेन, ख्वाजा अहमद अब्बास, चेतन आनंद, वी. शांताराम जैसे दिग्गज फिल्मकारों ने इसे पल्लवित किया। इनकी फिल्मों पर साहित्य की गहरी छाप देखने को मिलती है। चेतन आनंद ने 1946 में 'नीचा नगर' जैसी बेहतरीन फिल्म बनाई। कान फिल्म फेस्टिवल में इस फिल्म को 'ग्रांड प्रिक्स डू फेस्टिवल' पुरस्कार मिला। इस तरह कान फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कार पाने वाली पहली भारतीय फिल्म बनी-'नीचा नगर'। समानांतर फिल्मों की इस परंपरा को श्याम बेनेगल, गोविंद निहलानी, अदूर गोपालकृष्णन, गिरीश कासरवल्ली, मृणाल सेन, ऋत्विक घटक जैसे फिल्मकारों ने आगे बढ़ाया।

दिखता है जीवन का यथार्थ: समानांतर सिनेमा में जीवन और समाज का यथार्थ बहुत गहराई से दिखाया जाता रहा है। यह हिंदी सिनेमा का वह पक्ष है, जिसमें आम आदमी के जीवन की जद्दोजहद, सामाजिक असमानता और बदलाव को दर्शाया जाता है। फिल्मों के कथानक में यथार्थ को पूरी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करने का यह चलन 1950 के दशक में पश्चिम बंगाल से शुरू हुआ और बाद में इसे हिंदी समेत हर भाषा के सिनेमा ने अपनाया। इसका मकसद जीवन के कठोर यथार्थ, समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों, दलितों, महिलाओं और गरीबों की समस्याओं को दर्शकों के सामने लाना रहा, जिससे दर्शक खुद को जुड़ा महसूस करे। इन फिल्मों की यथार्थ परक कहानियां, आम लोगों की सामाजिक और आर्थिक जिंदगी से जुड़ी होती हैं। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, शहरी-ग्रामीण भेद, आर्थिक विषमताएं, जातिगत भेदभाव, स्त्री-पुरुष संबंध, नारी सशक्तिकरण जैसे मुद्दे समानांतर सिनेमा की पहचान रहे हैं। ये फिल्में पारंपरिक सिनेमा की तरह मनोरंजन या सपनों की दुनिया पर नहीं, बल्कि समाज की सच्चाइयों को विषय वस्तु बनाकर, बदलाव और सवाल उठाए जाने पर बल देती हैं। समानांतर सिनेमा का मकसद दर्शक को यथार्थ के करीब लाना और सांस्कृतिक-सामाजिक बदलाव की चेतना को जगाना रहा है। ये फिल्में भारतीय समाज के आइने का काम करती हैं।

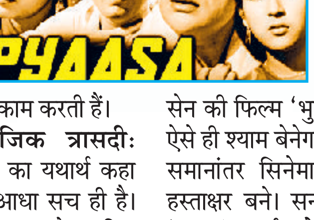

दिखाई जाती है सामाजिक त्रासदी: समानांतर सिनेमा को जीवन का यथार्थ कहा जरूर जाता है, लेकिन यह आधा सच ही है। क्योंकि समानांतर सिनेमा का कैमरा हमेशा दमित और शोषित वर्ग पर ही फोकस होता रहा है। जबकि सिर्फ दमन और शोषण ही समाज का यथार्थ नहीं है। समाज के यथार्थ में खुशी और गम दोनों शामिल होते हैं। केवल त्रासदी और नकारात्मकता को ही समाज का यथार्थ नहीं माना जा सकता। यदि समाज के यथार्थ में जीवन के सभी पक्षों को शामिल किया जाए, तो ही समानांतर सिनेमा को यथार्थवादी सिनेमा कहना ज्यादा उचित होगा। यदि इसमें 'अंकुर' जैसी फिल्म शामिल है तो 'हम साथ साथ हैं' को भी शामिल किया जा सकता है।

इन फिल्मकारों का रहा बड़ा योगदान: समानांतर और यथार्थपरक फिल्मों की बात करें, तो इस परंपरा को समृद्ध करने में कई फिल्मकारों का बेहद महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1953 में आई बिमल रॉय की 'दो बीघा जमीन' ने समीक्षकों की प्रशंसा के साथ व्यावसायिक सफलता प्राप्त की थी। इसके बाद बिमल रॉय ने 'बिराज बहू', 'देवदास', 'सुजाता' और 'बंदिनी' जैसी यथार्थपरक फिल्में बनाईं। ऐसी फिल्में बनाने वाले फिल्मकारों में गुरुदत्त भी थे। उनकी फिल्म 'प्यासा' को हिंदी सिनेमा की कालजयी फिल्म माना जाता है। अमेरिका की 'टाइम' पत्रिका ने इसे 'ऑल टाइम बेस्ट 100 फिल्म्स' में जगह दी है। समानांतर सिनेमा की नई शुरुआत 1969 में मृणाल सेन की फिल्म 'भुवन सोम' से माना जाता है। ऐसे ही श्याम बेनेगल 1973 में 'अंकुर' बनाकर समानांतर सिनेमा के नवसृजन के प्रमुख हस्ताक्षर बने। सन 1976 में मृणाल सेन ने 'मृगया' बनाई, जो मिथुन चक्रवर्ती की पहली फिल्म थी। श्याम बेनेगल की फिल्में 'अंकुर', 'मंथन' और 'भूमिका', मणि कौल की 'उसकी रोटी' और 'दुविधा'। सत्यजीत रे की 'पाथेर पांचाली', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सद्गति'। इन सभी फिल्म मेकर्स का समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। *